हिन्दी, उर्दू, पंजाबी में एक साथ प्रकाशित दिल्ली सरकार की पत्रिका

अंकः जुलाई–सितम्बर 2018

दिल्ली

ਦਿੱਲੀ

دلّی

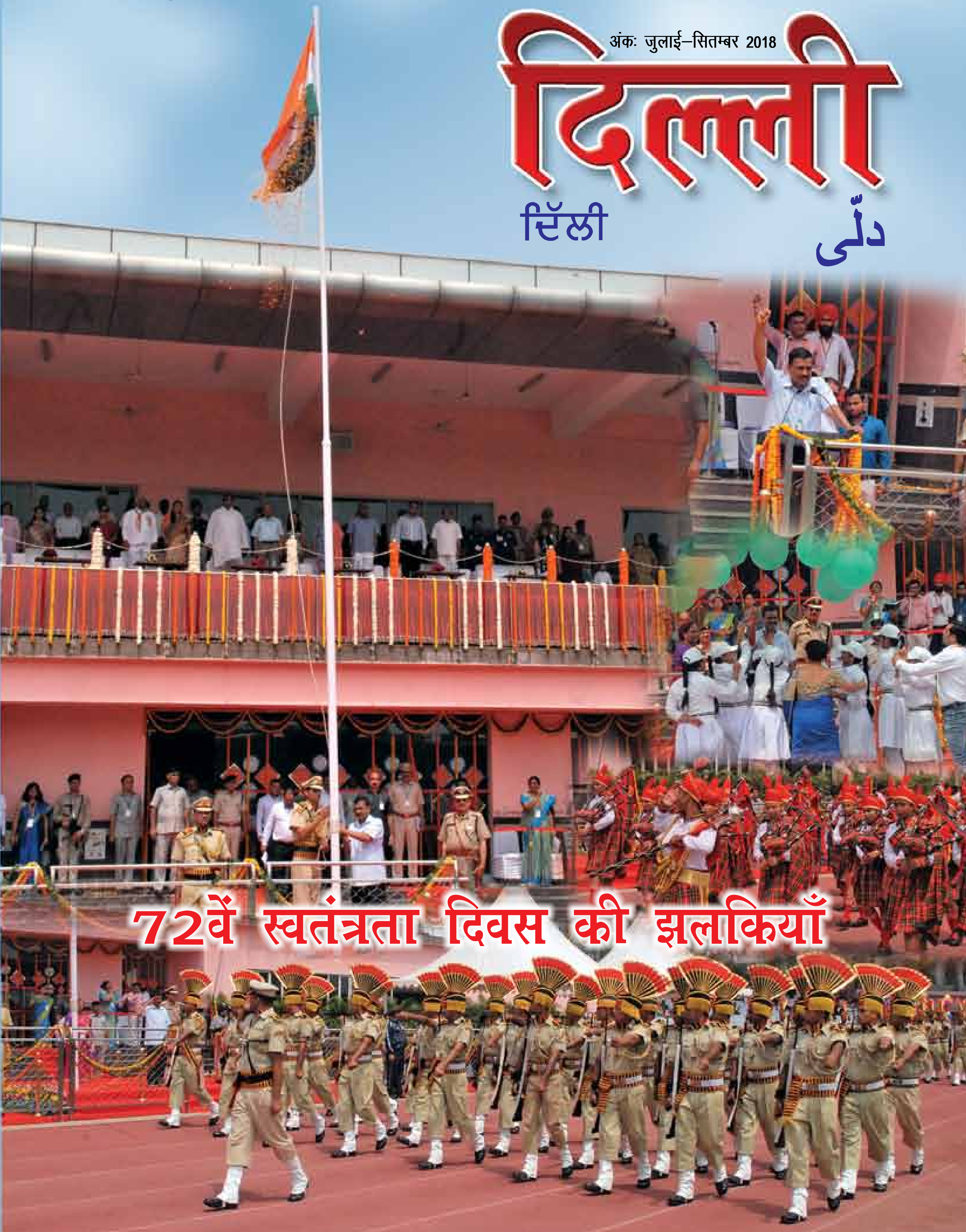

72वें स्वतंत्रता दिवस की झलकियाँ

दुनिया में पहली बार

सरकारी तंत्र में क्रांतिकारी बदलाव

सरकारी सेवाओं की

होम डिलीवरी

अरविंद केजरीवाल
मुख्यमंत्री, दिल्ली

सरकारी सेवाओं की लिस्ट (फेस-1)

राजस्व विभाग

1. जाति प्रमाण पत्र जारी करना (ओबीसी)
2. जाति प्रमाण पत्र जारी करना (एससी)
3. जाति प्रमाण पत्र जारी करना (एसटी)
4. आवास प्रमाण पत्र जारी करना
5. आय प्रमाण पत्र जारी करना
6. विलंबित जन्म आदेश जारी करना
7. विलंबित मृत्यु आदेश जारी करना
8. लाल डोरा सर्टिफिकेट जारी करना
9. भूमि स्थिति रिपोर्ट जारी करना
10. अक्षम व्यक्ति को स्थायी पहचान पत्र जारी करना
11. आरओआर जारी करना
12. दिवालिया प्रमाण पत्र जारी करना
13. जीवित सदस्य प्रमाण पत्र जारी करना
14. विवाह का पंजीकरण
15. नागरिक रक्षा स्वयंसेवक के रूप में नामांकन

समाज कल्याण विभाग

16. दिल्ली परिवार लाभ योजना
17. विकलांगता पेंशन योजना
18. वृद्धावस्था पेंशन से जुड़ी शिकायतें

परिवहन विभाग

19. डुप्लिकेट आरसी प्रमाण पत्र
20. आरसी में पता बदलना
21. स्वामित्व का हस्तांतरण
22. हाइपोथेकेशन जोड़ना
23. हाइपोथेकेशन समाप्तिकरण
24. अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करना
25. लर्नर का लाइसेंस
26. स्थायी ड्राइविंग लाइसेंस
27. ड्राइविंग लाइसेंस का नवीनीकरण
28. डुप्लिकेट ड्राइविंग लाइसेंस
29. डीएल में पते का परिवर्तन

दिल्ली जल बोर्ड

30. नया पानी / सीवर कनेक्शन
31. म्यूटेशन
32. पुनः खोलना (घर के पुनर्निर्माण के बाद)
33. डिस्कनेक्शन

खाद्य एवं आपूर्ति विभाग

34. प्राथमिकता घरेलू कार्ड जारी करना
35. सदस्य विवरण का अद्यतन एएवाई/प्राथमिकता घरेलू कार्ड

श्रम विभाग

36. यात्री लिफ्ट, लिफ्ट शाफ्ट और मशीन कक्ष की स्थापना की मंजूरी
37. दिल्ली दुकानें और स्थापना अधिनियम, 1954

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/ अन्य पिछड़ा वर्ग/अल्पसंख्यक कल्याण विभाग

38. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग/ अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों को शिक्षण शुल्क की प्रतिपूर्ति
39. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग/ अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों को ट्यूशन फीस की प्रतिपूर्ति
40. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग/ अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों को छात्रवृत्ति मेरिट (पहली से बारहवीं) कक्षा के लिये और अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों हेतु (छठी से बारहवीं)।

नोट: दिल्ली के नागरिक अब घर बैठे सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने के लिए 1076 पर कॉल करें। तत्पश्चात् हमारा अधिकारी आपके निवास पर आयेगा। केवल 50/-रुपये का शुल्क लिया जाएगा। अभी शुरूआत में 40 सरकारी सेवाओं की होम डिलीवरी से शुरू कर रहे हैं। (शेष सेवाओं को चरणबद्ध तरीके से जोड़ा जाएगा)।

दिल्ली सरकार — आप की सरकार

प्रशासनिक सुधार विभाग, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

दिल्ली सरकार — आप की सरकार

दिल्ली

अंक : जुलाई–सितम्बर 2018

प्रधान सम्पादक
डॉ. जयदेव षड़ंगी

सम्पादक मंडल
संदीप मिश्र
डॉ. पंकज श्रीवास्तव
नलिन चौहान
कंचन आज़ाद

सहायक सूचना अधिकारी (प्रकाशन)
उर्मिला बैनिवाल

छाया चित्र
सुधीर कुमार, अजय कुमार, योगेश जोशी

"दिल्ली" पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं तथा दिल्ली सरकार का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

पत्राचार का पता
प्रधान सम्पादक
दिल्ली सूचना एवं प्रसार निदेशालय
दिल्ली सरकार
खंड सं. 9, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110054
दूरभाष : 23819046, 23817926
फैक्स : 23814081
ई–मेल: delhidip@gmail.com

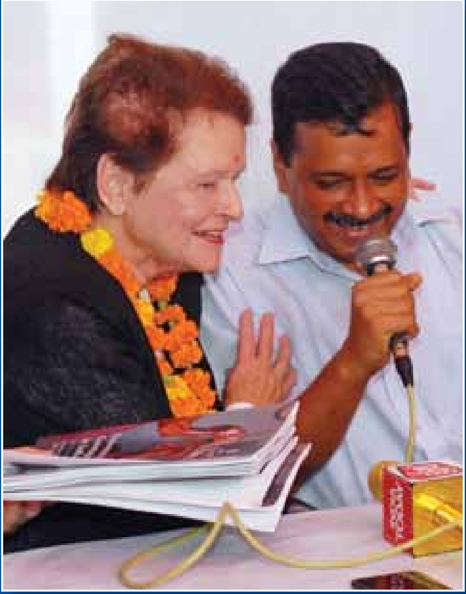

मोहल्ला क्लीनिक 23

एशियन गेम्स में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों का सम्मान 14

इस अंक में...

हिन्दी

72वां स्वतंत्रता दिवस 2
उत्तर पूर्व जिले को मिला प्रतिभा विकास विद्यालय का तोहफ़ा 7
शिक्षक दिवस समारोह 8
केजरीवाल सरकार ने बना दिया इतिहास 10
एशियन गेम्स में भारत का शानदार प्रदर्शन 13
द दिल्ली गजट 16
हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष और प्रसिद्ध कवि विष्णु खरे का निधन 19
कविता के आकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र का टूटना 21
दुनिया में मोहल्ला क्लीनिक जैसी योजना दूसरी नहीं 23
शहीद नरेंद्र सिंह के परिवार को मिलेगी एक करोड़ रुपये का सम्मान राशि ... 25
झंडा गीत 26
गोवा प्रेस प्रत्यायन समिति के प्रतिनिधियों ने दी दिल्ली सरकार के सचिव से भेंट 27

पंजाबी

72वां सुतंतरता दिवस भारत माता दी सॱची जै दे लई देश विच ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਲਿਆਉਣੀ ਹੋਵੇਗੀ - ਕੇਜਰੀਵਾਲ 1
ਹਰ ਜ਼ੋਨ ਵਿਚ ਖੁਲ੍ਹੇਗਾ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਵਿਕਾਸ ਸਕੂਲ 6
ਸਿੱਖਿਆ ਕਰਾਂਤੀ ਦਾ ਆਧਾਰ ਹੈ ਅਧਿਆਪਕ, ਦਿੱਲੀ ਸ਼ੁਕਰਗੁਜ਼ਾਰ ! 7
ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਬਣਾ ਦਿਤਾ ਇਤਿਹਾਸ 9
ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਬਣੇ ਏਸ਼ੀਅਨ ਖੇਡਾਂ ਦੇ ਤਮਗਾ ਜੇਤੂ 12
ਸ਼ਹੀਦ ਨਰੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਮਿਲੇਗੀ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪਏ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ 14

उर्दू

72واں یومِ آزادی بھارت ماتا کی سچی کامرانی کیلئے ملک میں خوشحالی لانی ہوگی۔کیجریوال 1
شمال مشرقی ضلع کوملا پرتبھا وکاس ودیالیہ کا تحفہ 6
ٹیچرڈے تقریب تعلمی انقلاب کی بنیاد ٹیچر 7
کیجریوال سرکار نے تاریخ رقم کی 9
کھلاڑیوں کا احترام 12
شہید نریندر سنگھ کے خاندان کو ملے گی ایک کروڑ روپے کی اعزازی رقم 14

72 वाँ स्वतंत्रता दिवस

भारत माता की सच्ची जय के लिए देश में ख़ुशहाली लाना होगा-केजरीवाल

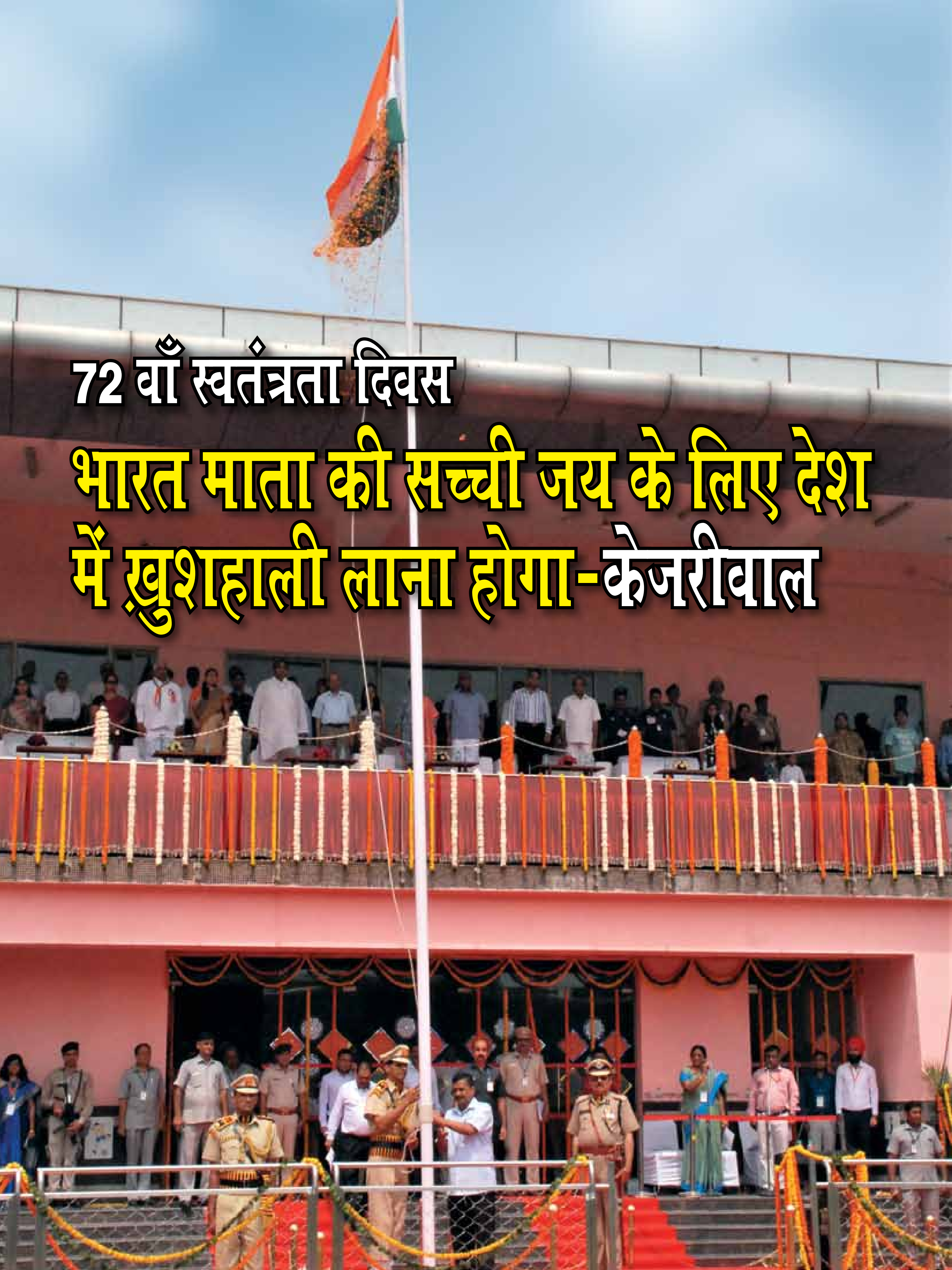

भारत की स्वतंत्रता के आंदोलन में दिल्ली की केंद्रीय भूमिका थी और देश की राजधानी का रुतबा रखने वाला यह शहर इसकी सालगिरह को हर्षोउल्लास से मनाता है। इस बार 72वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भी यही नज़ारा था। छत्रसाल स्टेडियम में हुए एक भव्य कार्यक्रम में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने तिरंगा फहराकर सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी।

श्री केजरीवाल ने कहा कि यह मौका उन शहीदों को याद करने का है जिन्होंने आजादी के लिए खून बहाया, यातनाएँ सहीं और शहीद हुए। साथ ही खुद से पूछने का भी मौका है कि क्या क्या उन शहीदों ने जो सपना देखा था, वह पूरा हो गया? उन्होंने कहा कि सत्तर साल, इकहत्तर साल किसी भी देश के जीवन में एक लंबा समय होता है। द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान पूरी तरह से नष्ट हो गया था। नागासाकी और हिरोशिमा पर बम फेके गए थे। लेकिन उसके बाद 20–25 साल के अंदर जापान वापस खड़ा हो गया। खूब प्रगति की और आज हमसे कही आगे है। हमारे आजाद होनें के बाद कई और ऐसे राष्ट्र हैं, कई और ऐसे देश हैं जो बाद में आजाद हुए। लेकिन आज विकास के क्षेत्र में हम से कहीं आगे निकल गए। ऐसा क्यों हुआ?

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब वे राजनीति में नहीं आए थे तो अक्सर इस सवाल से जूझते थे कि भारत पिछड़ा क्यों रह गया? हमारे देश के लोग अनपढ़ क्यों रह गए? हमारे देश के लोग गरीब क्यों रह गए ? हमारे देश में किसान आज भी आत्महत्या क्यों कर रहें है? आखिर हमारे में क्या कमी है? हमारे देश में इतने इंटेलिजेंट लोग हैं, इतने अच्छे लोग हैं, ईमानदार लोग हैं, हमारे देश में नदियाँ हैं, पहाड़ हैं, जंगल हैं, फिर हमारा देश पिछड़ा क्यों रह गया? लगता था कि जरूर कुछ न कुछ कारण होंगे जो सरकारें कुछ कर नहीं पा रही हैं। लेकिन सरकार में आने पर तीन साल का अनुभव बताता है कि दिल्ली में अभूतपूर्व विकास हुआ। दिल्ली के विकास की कहानी पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बन चुकी है।

श्री केजरीवाल ने कहा कि पिछले तीन साल में दिल्ली के सरकारी स्कूलों का काया पलट हुआ। दिल्ली के सरकारी स्कूलों के नतीजे प्राइवेट स्कूलों से कही ज्यादा बेहतर आ रहें हैं। दिल्ली के सरकारी स्कूल हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर रहे हैं। लोग अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों से निकाल–निकाल कर सरकारी स्कूलों में भर्ती करा रहे हैं। दिल्ली में मोहल्ला क्लीनिक बन रहे हैं जिनकी चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है। दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में सारी दवाइयाँ, सारे टेस्ट, सारा इलाज, सारे ऑपरेशन, सारी सर्जरी सब मुफ्त कर दिए गए हैं। दिल्ली के अंदर आज बिजली पूरे देश में सबसे सस्ती मिल रही है। दिल्ली के अंदर आज लोगों को 24 घंटे बिजली मिल रही है। लोग इन्वर्टर का नाम भूल गए, जनरेटर का नाम भूल गए, बैटरी वालों की दुकानें बंद हो गयी हैं। आज दिल्ली के अंदर घर–घर पानी पहुंचाया जा रहा है।

दिल्ली में आज सबसे सस्ती बिजली मिल रही है, सबसे सस्ता पानी मिल रहा है, पानी मुफ्त हो गया है। ऐसा पूरे देश में हो सकता था। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि अगर देश के बच्चों को अच्छी शिक्षा दे दी जाए, अच्छे स्कूलों में पढ़ा दिया, अच्छे कॉलेज में शिक्षा दे दी, तो पूरे सिर्फ एक पीढ़ी के अंदर देश से गरीबी और बेरोजगारी भी दूर हो सकती है। शर्त केवल एक है कि भ्रष्टाचार खत्म हो। वे 24 घंटे, रात दिन केवल एक ही बात सोचते हैं कि देश का विकास कैसे होगा? देश आगे कैसे बढ़ेगा? हमारे बच्चे कैसे पढ़ेंगे? अस्पतालों मे अच्छी सुविधा कैसे प्राप्त होगी? रात–दिन बस एक ही सपना देखते हैं कि हमारी प्यारी भारत माता, हमारा प्यारा भारत देश, दुनिया का नंबर 1 देश कैसे बनेगा? इस देश का हर बच्चा, इस देश का हर बूढ़ा, इस देश की हर एक औरत, इस देश का हर मर्द चाहता है कि हमारा देश दुनिया का नंबर 1 देश बने। हमारा सपना है कि साइन्स और टेक्नोलोजी मे, विज्ञान के क्षेत्र मे हमारा देश अमरीका को पीछे छोड़े।

अगर देश के बच्चों को अच्छी शिक्षा दे दी जाए, अच्छे स्कूलों में पढ़ा दिया, अच्छे कॉलेज में शिक्षा दे दी, तो पूरे सिर्फ एक पीढ़ी के अंदर देश से गरीबी और बेरोजगारी भी दूर हो सकती है। शर्त केवल एक है कि भ्रष्टाचार खत्म हो। वे 24 घंटे, रात दिन केवल एक ही बात सोचते हैं कि देश का विकास कैसे होगा?

श्री केजरीवाल ने भारत की प्राचीन सभ्यता की याद दिलाते हुए कहा कि भारत के महान वैज्ञानिक आर्यभट ने दुनिया को "0" (ज़ीरो) दिया। सबसे पहले केलकुलस, एलजेब्रा, डेसिमल का इस्तेमाल भारत के अंदर शुरू हुआ था। 2600 साल पहले सुश्रुत नाम के एक महान वैज्ञानिक ने दुनिया में पहली प्लास्टिक सर्जरी की थी। दुनिया मे सबसे पहले मोतियाबिन्द का ऑपरेशन किया था। फिर आज ऐसा क्या हो गया कि हमारे देश के अंदर रिसर्च बंद हो गयी? हमारे देश के अंदर इस तरह के वैज्ञानिक आविष्कार बंद हो गए? आज दुनिया में भारत को ऐसे देश के रूप में जाना जाता है जहाँ हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच दंगे होते हैं! जहा महिलाओं के साथ गलत काम होते हैं! लेकिन उनकी सरकार की कोशिशों से तस्वीर बदल रही है। लंदन में, न्यूयॉर्क में, वॉशिंगटन में, फ्राँस में, कनाडा में दिल्ली के मोहल्ला क्लीनिक की भी चर्चा हो रही है। जैसे दुनिया भर से लोग ताजमहल देखने आते हैं, वैसे ही मोहल्ला क्लीनिक देखने के लिए आ रहे हैं। दिल्ली के स्कूलों मे शुरू किए गए "हप्पिनेस केरीकुलम" कि चर्चा हो रही है।

श्री केजरीवाल ने कहा कि अक्सर हम लोग "भारत माता की जय" बोलते हैं। लेकिन केवल नारा लगाने से भारत माता कि जय नहीं होने वाली। भारत माता की जय तब

होगी, जब हमारे हर बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी। जब हिन्दू के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी, जब क्रिश्चियन के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी, जब मुसलमान के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी, जब सिख के, जैन के, बौद्ध के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी। जब बनिया के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी. जब मोची के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी, धोबी के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी, जब ब्राह्मण के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी, चाहे इस जाति का हो चाहे उस जाति का हो, हर जात के हर धर्म के बच्चे को अच्छी शिक्षा मिलेगी तब भारत माता की जय होगी। सारे स्कूल अच्छे होंगे तब भारत माता कि जय होगी। जब सारे अस्पताल अच्छे होंगे, तब भारत माता कि जय होगी। जब देश के अंदर खूब फ़ैक्टरियाँ बनेंगी, देश के अंदर खूब व्यापार बढ़ेगा, हर युवा को रोजगार मिलेगा तब भारत माता की जय होगी। जब ऐसा कोई देश नहीं होगा जो भारत को खड़ा होके आँख दिखा सके, तब भारत माता कि जय होगी। जब इस दुनिया के सारे देशों के साथ हमारे अच्छे रिश्ते होंगे, अच्छे दोस्त होंगे तब भारत माता कि जय होगी। जब इस देश के अंदर महिलाओं को सम्मान मिलेगा, महिलाओं को सुरक्षा मिलेगी तब भारत माता की जय होगी। जब इस देश के किसान को सम्मान मिलेगा, उसको अपनी सब फसलों का दाम मिलेगा, तब भारत माता की जय होगी ।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज से डेढ़–दो हजार साल पहले दुनिया कि सबसे मशहूर यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन या न्यूयॉर्क में नहीं नालंदा में थी। हमारे देश का यह विश्वविद्यालय नंबर 1 विश्वविद्यालय था पूरी दुनिया के अंदर। लेकिन आज दुनिया के टॉप 10 विश्वविद्यालयों मे एक भी भारत की यूनिवर्सिटी का नाम नहीं है। उनका सपना है कि आने वाले समय में टॉप 10 यूनिवर्सिटी के अंदर कम से कम तीन यूनिवर्सिटी भारत की होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दो तीन हजार साल पहले हड़प्पा मे, मोहनजोदाड़ो में, दुनिया का सबसे बेहतरीन सीवर सिस्टम था। लेकिन अब देश की राजधानी के अंदर एक प्रभावी सीवर सिस्टम नहीं है। बहरहाल, दिल्ली का सीवर सिस्टम बदलने कि तैयारी हो चुकी है। अगले पाँच साल के अंदर दिल्ली के अंदर पूरे देश का सबसे बेहतरीन सीवर सिस्टम होगा।

आज से डेढ़-दो हजार साल पहले दुनिया कि सबसे मशहूर यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन या न्यूयॉर्क में नहीं नालंदा में थी। हमारे देश का यह विश्वविद्यालय नंबर 1 विश्वविद्यालय था पूरी दुनिया के अंदर। लेकिन आज दुनिया के टॉप 10 विश्वविद्यालयों मे एक भी भारत की यूनिवर्सिटी का नाम नहीं है।

श्री केजरीवाल ने इस अवसर पर पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री को याद करते हुए कहा कि उन्होंने नारा दिया था– "जय जवान जय किसान।" लाल बहादुर

शास्त्री अपनी सादगी के लिए, अपनी ईमानदारी के लिए जाने जाते थे। उन्होंने कहा कि देश का सिपाही सरहद पर अपनी जान की बाज़ी लगाकर देश की रक्षा करता है। वैसे ही देश का किसान दोपहर की कड़ी धूप हो, चिलचिलाती ठंड हो य बारिश, खून पसीना बहा के, देश के लिए अन्न उपजाता है। इसीलिए उन्होंने जवान और किसान को सबसे ज्यादा सम्मान दिया। उनसे प्रेरणा लेकर शहीदों के परिवार को सम्मान देने के लिए दिल्ली सरकार ने एक–एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि देने का निर्णय किया है। अब दिल्ली के रहने वाले सैनिक हों या दिल्ली पुलिस के जाबाँज़ सिपाही या आग बुझाते हुए जान देने वाले फ़ायर सर्विस के लोग, उन सबके परिजनों को शहादत के बाद दिल्ली सरकार एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि और एक परिजन को नौकरी देगी।

श्री केजरीवाल ने कहा कि किसानों की आत्महत्या की ख़बर से उन्हें बहुत पीड़ा होती है। इसलिए दिल्ली मे किसानों की मदद के लिए एक नया प्लान बनाया गया है। हर किसान के खेत में, तीन–चार मीटर की ऊँचाई पर सोलर पैनल लगाया जाएगा, इससे किसान को एक लाख रुपया प्रति एकड़ की साल में अतिरिक्त आमदनी होगी। आज किसान को 30 से 40 हजार प्रति एकड़ की आमदनी होती है। एक तरह से उसकी आमदनी 3 से 4 गुना हो जाएगी।

उन्होंने कहा कि काफ़ी वक्त बीत चुका है, इसलिए उनकी सरकार विकास कार्यों को तेजी से पूरा करना चाहती है।

इस अवसर पर तमाम स्कूलों के बच्चो ने रंगारंग कार्यक्रम पेश किया। भारत के गौरवशाली अतीत की झाँकी के साथ–साथ शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि से भरे इन कार्यक्रमों ने दर्शकों का मन मोह लिया। ■

उत्तर पूर्व ज़िले को मिला प्रतिभा विकास विद्यालय का तोहफ़ा

हर ज़ोन में खुलेगा प्रतिभा विकास विद्यालय

दिल्ली सरकार ने उत्तर–पूर्वी जिले को एक राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय का तोहफा दिया है। दिल्ली के उप–मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने गौतमपुरी में राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय का उद्घाटन किया।

श्री सिसोदिया ने बच्चों, अभिभावकों, शिक्षकों और शिक्षा विभाग के अधिकारियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि उनकी सरकार आने के बाद दिल्ली में खुलने वाला ये पाँचवाँ प्रतिभा विकास विद्यालय है। अब तक दिल्ली में कुल 22 प्रतिभा विद्यालय खुल चुके हैं। कुल 29 जोन हैं और वे चाहते हैं कि हर जोन में कम से कम एक प्रतिभा विद्यालय हो।

श्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि सरकार की ये भी योजना है कि हर जोन में कुछ विशेष स्ट्रीम वाले प्रतिभा विद्यालय खोले जाएं। मसलन, खेलों में प्रतिभा रखने वाले बच्चों को खेल प्रतिभा विद्यालय में अपने आप को निखारने का मौका मिले। इसी तरह आर्ट, कल्चर, म्यूजिक, थियेटर, एक्टिंग में रुचि रखने वाले प्रतिभाशाली स्टूडेंट्स को इस तरह के स्ट्रीम वाले प्रतिभा विद्यालयों में मौका दिया जाए। अगर कोई बच्चा साइंस में बहुत प्रतिभाशाली है और इस फील्ड में कुछ अलग करना चाहता है तो उसके लिए साइंस स्ट्रीम वाले प्रतिभा विद्यालय हों।

शिक्षा मंत्री ने शिक्षकों से कहा कि ये हमारे क्षेत्र की प्रतिभाएं हैं जो अब आपके हवाले हैं। इनमें से अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, पत्रकार, वैज्ञानिक इत्यादि निकालना आप सबकी जिम्मेदारी है।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली की शिक्षा क्रांति की चर्चा पूरी दुनिया में है। वे एजुकेशन की एक कांफ्रेंस में भाग लेने रूस गए थे जहाँ 70 देशों के प्रतिनिधियों के बीच जब बताया कि दिल्ली में एजुकेशन क्षेत्र में क्या–क्या हो रहा है तो खूब तालियां बजीं। खूब सराहना मिली। लेकिन वो तालियां, वो सराहना उनके लिए नहीं बल्कि बच्चों, टीचर्स और एजुकेशन डिपार्टमेंट के अधिकारियों–कर्मचारियों के लिए थीं।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि वे चाहते हैं कि अभिभावकों में ये भरोसा आ जाए कि सरकार ने अच्छे स्कूल खोल रखे हैं, हमें बहुत नामी–गिरामी प्राइवेट स्कूलों की जरूरत नहीं है।

शिक्षा क्रांति का आधार है शिक्षक, दिल्ली शुक्रगुज़ार !

दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था में आए परिवर्तन का ज़िक्र अब देश के बाहर भी हो रहा है। दिल्ली सरकार इसका पूरा श्रेय शिक्षकों को देती है। दिल्ली के त्यागराज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में 5 सितम्बर, 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ऐसे तमाम शिक्षकों को सम्मानित किया जिन्होंने इस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुख्यंत्री ने कहा कि दिल्ली में हुई 'शिक्षा क्रांति' का आधार यहाँ के शिक्षक ही हैं।

श्री केजरीवाल ने समारोह में मौजूद शिक्षकों और प्रधानाचार्यों को बधाई देते हुए कहा कि साल में एक बार शिक्षक दिवस पर भव्य आयोजन यह बताने के लिए होता है कि दिल्ली अपने शिक्षकों का सम्मान करती है। उनसे प्यार करती है। पूरी दिल्ली शिक्षकों की शुक्रगुज़ार है जिनकी मेहनत की वजह से सरकारी स्कूलों की प्रतिष्ठा रात–दिन बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत ही नहीं, अंग्रेज़ों के आगमन से पहले तक समाज में सबसे ऊंचा स्थान शिक्षक का होता था लेकिन अंग्रेजों ने, मैकाले की शिक्षा पद्धति लागू की जिसके बाद से शिक्षा व्यवस्था बिगड़ती गयी। दिल्ली में हो रही शिक्षा क्रांति का उद्देश्य दोबारा शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करके शिक्षकों को मान दिलाना है। श्री केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में माहौल बदल रहा है। पहले किसी के पास थोड़ा सा भी पैसा होता था तो वह अपने बच्चे को प्राइवेट स्कूल भेजना चाहता था। लेकिन अब दिल्ली में लोग अपने बच्चे को

प्राइवेट स्कूल से निकाल कर सरकारी स्कूलों में भर्ती करा रहें है। शायद भारत के इतिहास में ये पहली बार हो रहा है। पहले ये सोचा भी नहीं जा सकता था कि ऐसा हो भी सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वे प्राइवेट स्कूलों के खिलाफ नहीं हैं। न ही यह कह रहे हैं कि सभी लोग अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों से निकाल कर सरकारी स्कूलों में भर्ती कराएँ। लेकिन अगर कुछ लोग भी अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों से सरकारी स्कूलों में बिना किसी मजबूरी के भर्ती करा रहे हैं तो यह सरकारी स्कूलों के अंदर हुए सुधार को इंगित करता है। पिछले तीन साल में सरकारी स्कूलों में जो क्रांति हुई है, उसकी वजह से रिज़ल्ट अच्छे आ रहे हैं। इसमें सबसे बड़ा योगदान शिक्षकों का है। शिक्षक पहले भी वही थे, वही प्रधानाचार्य थे, लेकिन माहौल बदला तो इन्हीं लोगों ने क्रांति करके दिखाई। सरकार ने ऐसा माहौल तैयार किया कि लोगों को लगा कि बदलाव हो तो सकता है। पूरे समाज ने इस बदलाव में भागीदारी की। 'रीडिंग मेला' लगा तो आम नागरिकों ने, अभिभावकों ने रुचि लेकर भागीदारी की। शिक्षा में बदलाव का श्रेय पूरी दिल्ली को जाता है।

मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि अब शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की कोशिश को अगल स्तर पर ले जाना है। अभी तक इंफ्रास्टक्चर सुधारना, सफाई व्यवस्था ठीक करना, पानी की व्यवस्था ठीक करना, शौचालय ठीक करना, कमरे बनवाना, शिक्षकों को प्रेरित करना, उनकी ट्रेनिंग कराने जैसे काम को प्राथमिकता थी, लेकिन अब शिक्षा के असल उद्देश्य पर जोर देना है। बच्चों की अच्छी शिक्षा का मतलब है कि वह बड़ा होकर अच्छा नागरिक बन सके। दिल्ली सरकार ऐसे बच्चे तैयार करना चाहती है, जिनकी रग–रग में, खून के हर कतरे में देशभक्ति की भावना भरी हो। जो बड़े हो के देश के लिए मर मिटने को तैयार हों।

श्री केजरीवाल ने कहा कि मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में रटा–रटा कर नंबर लाने पर जोर है। जबकि जरूरत ऐसी शिक्षा व्यवस्था तैयार करने की है कि बड़े होने के बाद बच्चे बेरोजगार न रहें। अगर किसी ने ग्रेजुएशन कर ली, पोस्ट ग्रेजुएशन कर ली, पीएचडीए कर ली और उसके बाद भी वह बेरोजगार है इसका मतलब शिक्षा व्यवस्था के अंदर कुछ समस्या है। इतनी पढ़ाई के बाद भी कोई बेरोजगार कैसे हो सकता है? अभी शिक्षा व्यवस्था का मतलब बस डिग्री ही डिग्री है।

श्री केजरीवाल ने कहा कि वे शिक्षक दिवस के अवसर पर सभी शिक्षकों का आह्वान करना चाहते हैं कि वे अगले चरण में जाने की कोशिश करें। अगर ऐसी शिक्षा व्यवस्था तैयार कर ली गई जो अच्छा कैरेक्टर दे, जो एक देशभक्त पैदा करे और जो बच्चों को अपनी रोजी रोटी कमाने के लायक बना दे तो यह पूरी दुनिया के लिए मिसाल होगी। अंग्रेज़ो ने हिंदुस्तानियों को क्लर्क बनने के लिए तैयार किया था। हमें इंडिपेंडट इंसान बनाने के लिए तैयार नहीं किया था।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था के सिस्टम में एक आत्मविश्वास नज़र आता है कि इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। हम दुनिया के दूसरे देशों में पढ़ा रहे भारतीय शिक्षकों को बुलाकर सम्मेलन करेंगे। सेमिनार कराएँगे जिसमे विचारोत्तेजक चर्चा होगी। उनसे सीखेंगे कि बाकी दुनिया के अंदर किस किस्म कि शिक्षा व्यवस्था है ताकि हमारे स्कूल नेशनल नहीं इंटरनेशनल स्टैंडर्ड के बनें, हमारी यूनिवर्सिटी दुनिया की टॉप 10 यूनिवर्सिटिस में हों। दुनिया में दिल्ली को एक नॉलेज सेंटर के रूप में जाना जाये।

उन्होंने कहा कि दिल्ली के शिक्षक इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। वे देश का भविष्य बना रहे हैं जिसके लिए पूरा समाज शुक्रगुज़ार है। ■

केजरीवाल सरकार ने बना दिया इतिहास

दुनिया में पहली बार लागू हुई डोर स्टेप डिलिवरी स्कीम
दिल्ली वाले घर बैठे पाने लगे सात विभागों की 40 सेवाएँ

नागरिक प्रशासन के इतिहास में 10 सितंबर 2018 का दिन एक सुनहरे मोड़ के रूप में दर्ज हो गया। इस दिन दिल्ली ही नहीं दुनिया में अपनी तरह की अनोखी 'डोर स्टेप डिलवरी योजना' का शुभारंभ हुआ। केजरीवाल सरकार के इस ड्रीम प्रोजेक्ट पर काफी दिनों से काम चल रहा था। योजना की सफलता को लेकर जताई जा रही तमाम आशंकाओं को निराधार साबित करते हुए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इसे जमीन पर उतार ही दिया।

दिल्ली सचिवालय में, अपने कैबिनेट मंत्रियों के साथ इस योजना का शुभारंभ करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, 'यह योजना एक अजूबा, एक एक्सपेरिमेंट है और पूरी दुनिया के अंदर गवर्नेंस का एक नया मॉडल है, लेकिन यह आसानी से लागू नहीं हुआ, इसके लिए हमने बहुत संघर्ष किया है।'

सरकारी प्रमाण पत्रों को लोगों के घर पहुँचाने वाली इस योजना के पहले चरण में सात विभागों की 40 सेवाओं को शामिल किया गया है। यह सेवा सुबह 8 से रात

10 बजे तक सातों दिन उपलब्ध होगी। सभी सेवाओं के लिए एक कॉल सेंटर नंबर 1076 जारी किया गया। पहले दिन से ही हजारों दिल्ली वाली इस योजना से जुड़ गए। इस योजना के तहत किसी व्यक्ति को फोन करके काम से संबंधित जानकारी और घर पर मिलने का समय बताना होता है। मोबाइल सहायक उसके घर जाता है। घर पर ही काम से संबंधित कागजात स्कैन किया जाता है। इसके लिए संबंधित सेवा की फीस के साथ 50 रुपये अतिरिक्त शुल्क लिया जाता है। फिर प्रमाणपत्र डाक से उपभोक्ता के घर भेज दिया जाता है। योजना का उद्‌घाटन करते हुए मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि जल्दी ही इस योजना का दायरा 100 सेवाओं तक कर दिया जाएगा। धीरे–धीरे दिल्ली सरकार से संबंधित सभी नागरिक सेवाओं को घर बैठे उपलब्ध कराया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार राशन की डोर स्टेप डिलीवरी पर भी काम कर रही है। नई सेवा के साथ ही एक नए युग की शुरुआत हो रही है। इस सेवा की शुरुआत का सीधा प्रसारण दिल्ली के 58 केंद्र पर किया गया। मुख्यमंत्री ने इन केंद्रों पर आए लोगों से सीधी बात की। उन्हें सरकार की योजना से अवगत कराया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आम जनता को सरकारी विभागों में चक्कर काटने की अब जरूरत नहीं पड़ेगी। सरकारी विभागों से लाइनें खत्म होंगी।

फिलहाल इस योजना के तहत विवाह प्रमाण पत्र, विधवा पेंशन, गरीब महिलाओं की बेटी की शादी का प्रमाण पत्र, निर्माण गतिविधियों में लगे कर्मचारियों का अनुबंध नवीनीकरण, पानी के कनेक्शन, सीवर कनेक्शन, कनेक्शन रीओपन, कनेक्शन काटना, गरीब परिवारों का बीमा कार्ड, ओल्ड ऐज पेंशन, विकलांग पेंशन, दिल्ली फैमली बेनीफिट स्कीम, वाहन आरसी, आरसी में बदलाव, मालिकाना हक बदलाव आदि, ओबीसी, एसी, एसटी प्रमाण पत्र, डोमिसाइल, आय प्रमाणपत्र, जन्म मृत्यु प्रमाण, जमीन रिकॉर्ड जैसी सुविधाएँ शामिल हैं।

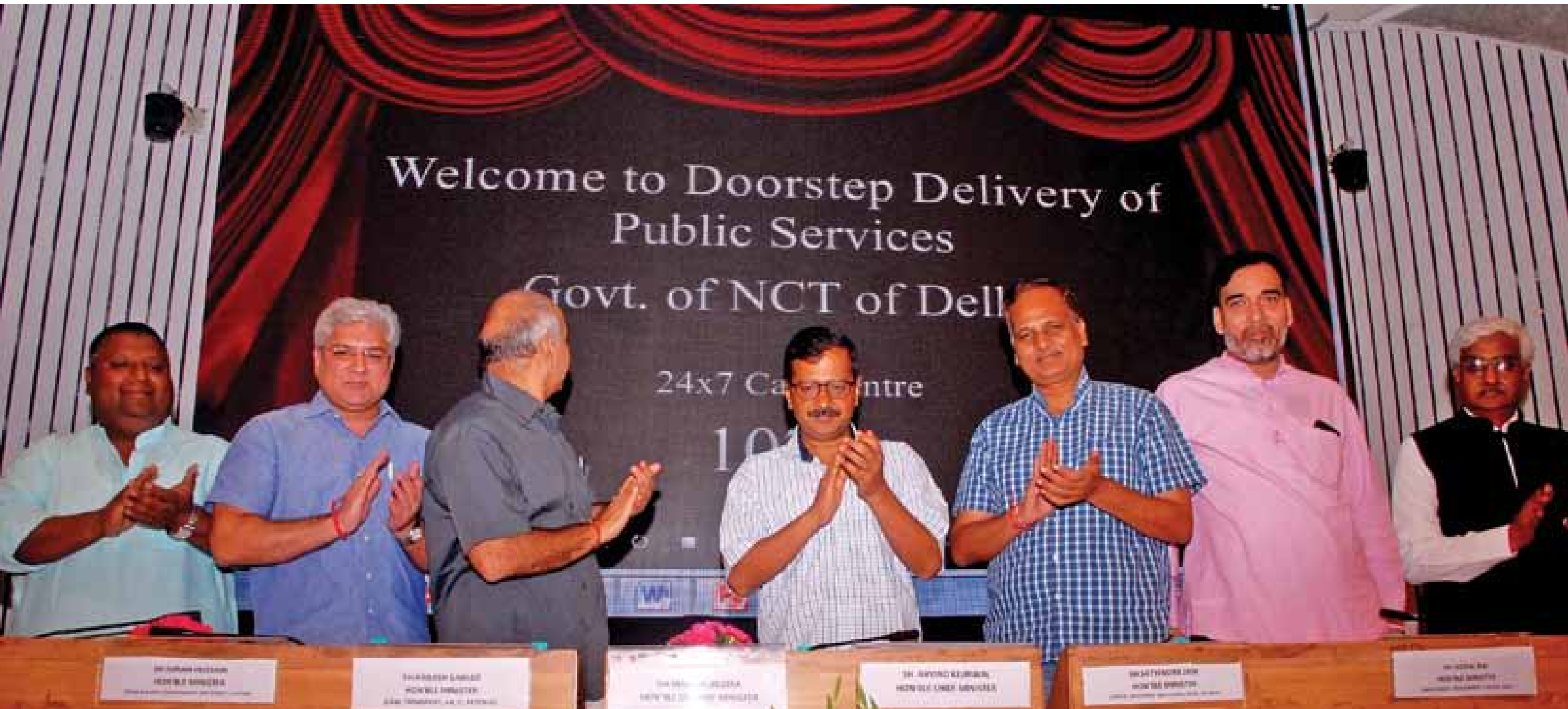

डोर स्टेप डिलीवरी ऑफ सर्विसेस को लागू करने को लेकर मुख्यमंत्री ने दिये सख्त निर्देश

- मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने 'डोर स्टेप डिलीवरी ऑफ सर्विसेस' योजना को लागू करने को लेकर दिल्ली कैबिनेट के सभी मंत्रियों को एक सख्त निर्देश जारी किया। मुख्यमंत्री खुद डोर स्टेप डिलीवरी ऑफ सर्विसेस योजना की निगरानी कर रहे हैं।
- मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया है कि मोबाइल सहायक की तरफ से किसी भी विभाग में आया कोई भी मामला संबंधित मंत्री की मंजूरी के बिना रद्द नहीं किया जा सकेगा।
- ऐसे आरोप लग रहे थे कि कई मामलों में निचले स्तर पर रिश्वत के लिए आवेदनों को रिजेक्ट कर दिया जाता है या फिर उनमें देरी की जाती है। जबकि सरकार के मुताबिक 'डोर स्टेप डिलीवरी ऑफ सर्विसेस' योजना का उद्देश्य दिल्ली के नागरिकों को न केवल उनके घर पर बेहद सहूलियत के साथ सरकारी सेवाएं मुहैया कराना है, बल्कि इसका उद्देश्य विभिन्न सरकारी विभागों में विभिन्न स्तर पर भ्रष्टाचार का खात्मा करना भी है। मुख्यमंत्री की तरफ से जारी निर्देश के अनुसार, अगर किसी मामले को रिजेक्ट करना है तो इसके लिए संबंधित विभाग के मंत्री से मंजूरी लेनी होगी। इस तरह के मामलों पर २४ घंटे के भीतर फैसला लेना होगा।
- इसके अलावा मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ये भी निर्देश दिया कि सेवाओं की डिलीवरी के लिए निर्धारित समय सीमा का हर हाल में पालन किया जाना चाहिए। समय सीमा संबंधी कोई भी उल्लंघन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सरकार का मानना है कि कुछ भ्रष्ट अधिकारीध्कर्मचारी कुछ आवेदनों को जानबूझकर लटकाते हैं जिससे काम में देरी हो और आवेदन करने वाले लोग रिश्वत देने पर बाध्य हो जाएं। दिल्ली सरकार, भ्रष्टाचार के मामलों में बिलकुल भी कोताही बर्दाश्त नहीं कर रही है और नई योजना भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करने में मास्टरस्ट्रोक साबित होगी।
- अगर इस योजना में किसी आवेदन को लेकर देरी की जाती है तो ये माना जाएगा कि भ्रष्ट तौर-तरीकों को खत्म करने वाली एक जनहितकारी योजना को नाकाम करने की कोशिश है।
- सभी विभाग प्रमुखों/सचिवों को निर्देश दिया गया कि वो खुद निगरानी करें और सर्विसेस की डिलीवरी के लिए निर्धारित समय सीमा का पालन सख्ती से सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री न कहा कि समय सीमा के उल्लंघन को बहुत गंभीरता से लिया जाएगा और दोषी अधिकारी के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। ऐसे मामलों में विभाग प्रमुखध्सचिव भी जिम्मेदार होंगे।
- मुख्यमंत्री ने ये भी निर्देश दिया है कि देरी वाले सभी मामलों की रिपोर्ट उन्हें रोजाना दी जाए। मुख्यमंत्री खुद आने वाली कॉल्स, बैक-एंड सिस्टम और आउटपुट की निगरानी कर रहे हैं। ■

एशियन गेम्स में भारत का शानदार प्रदर्शन

इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में हुए 18वें एशियन गेम्स में भारत ने अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 15 गोल्ड, 24 सिल्वर और 30 कांस्य समेत 69 मेडल अपने नाम किए। इससे पहले 1951 का प्रदर्शन बेहतरीन था जिसमें भारतीय खिलाड़ियों के 51 मेडल मिले थे। खास बात ये है कि इस बार 21 राज्यों के खिलाड़ियों ने भारत की ओर से मेडल जीते। सबसे ज्यादा हरियाणा ने 18 मेडल जीते जबकि दिल्ली के खिलाड़ियों को 9 मेडल मिले।

एशियन गेम्स 2018 में गोल्ड जीतने वाले खिलाड़ी

बजरंग पूनिया–कुश्ती (पुरुष फ्री स्टाइल 65 किलोग्राम)
भारतीय रेसलर बजरंग पूनिया ने जापान के रेसलर ताकातिनी दायची को हराकर पुरुषों के 65 किलोग्राम भा रवर्ग फ्रीस्टाइल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता।

विनेश फोगाट–कुश्ती (महिला फ्री स्टाइल 50 किलोग्राम)

महिला पहलवान विनेश फोगाट ने 50 किलोग्राम भारवर्ग फ्रीस्टाइल स्पर्धा के फाइनल में जापानी महिला पहलवान यूकी आइरी को 6–2 से हराकर गोल्ड पर कब्जा किया। पहली बार किसी भारतीय महिला पहलवाल को गोल्ड मिला।

सौरभ चौधरी–शूटिंग (पुरुष 10 मीटर एयर पिस्टल)
शूटर सौरभ चौधरी ने 10 मी एयर पिस्टल इवेंट में भारत को गोल्ड मेडल दिलाया।

राही सरनोबत–शूटिंग (महिला 25 मीटर पिस्टल)
25 मीटर एयर पिस्टल में भारत की राही सरनोबत ने गोल्ड मेडल जीता। फाइनल में उनका मुकाबला थाईलैंड की निशानेबाज से था।

सरवन सिंह, दत्तू भोकनल, ओम प्रकाश, सुखमीत–पुरुष रोइंग
भारतीय रोइंग टीम ने (नौकायन) पुरुषों की 'क्वाडरपल स्कल्स स्पर्धा' में गोल्ड मेडल जीता। स्वर्ण सिंह, दत्तु भोकनल, ओम प्रकाश और सुखमीत की टीम ने गोल्ड मेडल दिलाया।

रोहन बोपन्ना और दिविज शरण–टेनिस पुरुष डबल्स
टेनिस के डबल्स फाइनल में रोहन बोपन्ना और दिविज शरण की जोड़ी ने शानदार खेल दिखाते हुए कजाखस्तान की जोड़ी को हराया।

तेजिंदर सिंह तूर (पुरुष शॉटपुट)
तेजिंदरपाल सिंह तूर शॉट पुट स्पर्धा में गोल्ड मेडल अपने नाम कर लिया। तूर ने 20.75 मुकाबले में एशियाई रिकॉर्ड के साथ पहला स्थान भी हासिल किया

नीरज चोपड़ा (पुरुष जेवलिन थ्रो)
मेन्स जेवलिन थ्रो में भारत के नीरज चोपड़ा ने स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा। नीरज ने खुद का ही नेशनल रिकॉर्ड तोड़ा।

मंजीत सिंह (पुरुष 800 मीटर रेस)
भारत के मनजीत सिंह ने पुरुषों की 800 मीटर स्पर्धा में स्वर्ण पदक अपने नाम किया है। मनजीत ने 1 मिनट 46.15 सेकेंड का समय लिया।

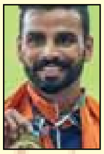

अरपिंदर सिंह (पुरुष ट्रिपल जंप)
अरपिंदर ने ट्रिपल जंप में गोल्ड जीतकर इतिहास रचा। अरपिंदर ने भारत को 48 साल बाद ट्रिपल जंप में गोल्ड मेडल दिलाया।

स्वप्ना बर्मन (महिला हैप्टाथलन)
स्वप्ना बर्मन ने हेप्टाथलन 800 मीटर रेस में 808 अंक हासिल किए और सात अलग अलग इवेंट में कुल 6 हजार अंकों के साथ गोल्ड पर कब्जा जमाया। ऐसा करने वाली वह पहली भारतीय एथलीट है।

जिनसन जॉनसन (पुरुष 1500 मीटर)
भारतीय धावक जिनसन जॉनसन ने 1500 मीटर फाइनल रेस में गोल्ड मेडल जीता।

महिला 4 × 400 रिले
महिलाओं की चार गुणा चार सौ मीटर के रेस के फाइनल में हिमा दास की अगुआई में भारत ने गोल्ड मेडल अपने नाम किया। इस रेस में हिमा का साथ एमआर पूवामा, सरिताबेन गायकवाड़ और विस्मय कोरोथ ने निभाया।

अमित पंघाल (बॉक्सिग)
भारतीय मुक्केबाज अमित पंघाल ने भारत को 49 किलोग्राम भारवर्ग के मुक्केबाजी में गोल्ड दिलाया। फाइनल में उनका मुकाबला रियो ओलंपिक गोल्ड मेडलिस्ट उजबेकिस्तान के हसनबॉय दुश्मातोव से था।

भारतीय ब्रिज टीम
ब्रिज में भी भारत को गोल्ड मेडल मिला है। 60 वर्षीय प्रणबनाथ और 56 वर्षीय शिबनाथ सरकार की जोड़ी ने इस कम लोकप्रिय खेलों में गोल्ड मेडल जीता। ■

एशियन गेम्स में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों का सम्मान

ASIAN GAMES 2018
Jakarta Palembang

बच्चों के लिए प्रेरणा बनें एशियन गेम्स के पदक विजेता

एशियन गेम्स में दिल्ली का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों का दिल्ली के मुख्यमंत्री ने सचिवालय में आयोजित एक समारोह में सम्मान किया। उन्होंने दिल्ली और देशवासियों की तरफ से खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि खिलाड़ियों ने जिस विषम परिस्थिति और कम संसाधनों के बावजूद परिवार और देश का नाम रोशन किया है, उसक जितनी तारीफ की जाए, कम है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार खिलाड़ियों के लिए जो भी कर सकती है, जरूर करेगी। उनकी सरकार ने पॉलिसी में बदलाव किया है जिससे पदक जीतने वालें खिलाड़ियों को अब पुरस्कार के रूप में ज्यादा रकम दी जाएगी। उन्होंने बताया कि एशियन गेम्स मे स्वर्ण पदक जीतने वाले खिलाड़ी को पहले 20 लाख रुपये पुरस्कार राशि दी जाती थी जिसे बढ़ाकर दिल्ली सरकार ने एक करोड़ रुपये कर दिया है। इसी तरह एशियन गेम्स में पहले रजत पदक जीतने वाले खिलाड़ी को 14 लाख रुपये मिलते थे जिसे बढ़ाकर अब 75 लाख रुपये कर दिया गया है। कांस्य पदक विजेताओं को पहले 10 लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी जाती थी जो अब बढ़कर 50

लाख रुपये हो गयी है। उम्मीद है कि इससे खिलाड़ियों को काफी मदद मिलेगी। सिर्फ पैसे से नहीं, और भी जो जरुरत होगी खिलाड़ियों की, दिल्ली सरकार उसे पूरा करेगी। खिलाड़ियों के प्रशिक्षकों को 3 लाख रुपये की पुरस्कार राशि दी जाती थी जिसे अब बढ़ाकर 6 लाख रुपये कर दिया गया है।

अरविंद केजरीवाल ने कि ये खिलाड़ी दूसरे बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। एशियन गेम्स में पदक जितना असंभव सा लगता है। ये खिलाड़ी ऐसे बच्चों को प्रेरणा दे सकते है। उन्होंने कहा कि उनकी इच्छा है कि ये खिलाड़ी तमाम स्कूलों में जाएँ ताकि बच्चे इनसे मिलकर प्रेरित हो सकें।

एशियन गेम्स, 2018 में पदक जीतने वाले दिल्ली के खिलाड़ियों और उनके प्रशिक्षकों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली और देश का नाम रोशन करने वाली इन खेल प्रतिभाओं को पुरस्कार राशि से सम्मानित करने के लिए एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। खिलाड़ियो और भावी खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए दिल्ली सरकार की योजनाओं को बताते हुए उन्होंने कहा कि जल्दी ही इस संदर्भ में दो नीतियाँ लागू की जाएँगी। इसके जरिये ऐसे खिलाड़ियों को सुविधाएं मुहैया कराई जाएँगी जिन्होनें राष्ट्रीय या अन्तराष्ट्रीय स्तर पर एक बार भी कोई पदक जीता है। ऐसे खिलाड़ियों को आर्थिक मदद दी जाएगी। इसके लिए दिल्ली सरकार एक कमेटी बनाएगी जिसमें खेल जगत से जुड़ी हस्तियाँ और अधिकारी होंगे। किसी खिलाड़ी को क्या–क्या सुविधा दी जाये और कितनी आर्थिक सहायता दी जाए, इसकी कोई लिमिट नहीं रखी गयी है। ये सब यह कमेटी तय करेगी। ■

The Delhi Gazette.

PUBLISHED EVERY WEDNESDAY AND SATURDAY.

NEW SERIES, VOL. VII.] DELHI :—WEDNESDAY, NOVEMBER 15, 1848. [No. 10

Delhi Gazette Press Advertisements.

Shipping Advertisements.

FOR LONDON.—To leave on or about the 1st February, 1849, The new Frigate-built Passenger Ship "TARIA..."

FOR LONDON. Direct, to be despatched as usual, about the 15th of February, 1849, The well-known ship "MARLBOROUGH,"

Millinery and Clothing Establishments.

CAWNPORE MILLINERY DEPOT.—Mrs. Campbell, Milliner & Dress Maker.

J. L. M. BEAUMONT,—Habit Maker, Embroiderer, Army Accoutrement Manufacturer, Agra.

MEERUT CLOTHING ESTABLISHMENT.

SELECTED BY Mr. F. W. Browne, DURING THE LAST SUMMER, IN LONDON AND PARIS.

SUPERIOR WINES AND TABLE SUPPLIES,

A DIVIDEND—at the rate of 8 per cent per annum on Rs. 20 per share, is now payable at the Bank.

CAWNPORE BANK.—The Cawnpore Bank draws bills...

Banking Adve...

AGRA AND UNITED ...

द दिल्ली गजट

दिल्ली का पहला अँग्रेज़ी अख़बार

इस बात से कम लोग ही वाकिफ होंगे कि दिल्ली के पहले अंग्रेजी अख़बार का नाम 'द दिल्ली गजट' था। दुर्भाग्य से वर्ष 1833 में आरंभ हुए इस अख़बार की शुरूआती पहले चार साल की कोई प्रतियाँ उपलब्ध नहीं है। मिरर ऑफ इंडियन प्रेस के अनुसार, इस अख़बार को एच.होप नामक अंग्रेज ने स्थापित किया था जो कि मेरठ आब्जर्वर से भी जुड़ा हुआ था। उसने दिसंबर 1936 में सरकारी नौकरी मिलने के बाद दिल्ली गजट छोड़ दिया। जबकि उसके कुछ महीनों बाद तक इस अख़बार को उसके ग्रिगोरी नामक अंग्रेज मुद्रक और प्रकाशक के कुछ उदार और मददगार दोस्तों ने बनाए रखा।

अख़बार ने अपने संवाददाताओं को बताया था कि 'उन्हें एक महान लक्ष्य को कभी विस्मृत नहीं करना चाहिए, जिसके लिए हमारे अख़बार की स्थापना की गई थी। जो कि इन सूबों के विशाल प्राकृतिक संसाधनों के विकास और यहां के निवासियों के नैतिक और सामाजिक परिस्थितियों में सुधार है। आप उन विषयों पर अपना समय लगाएँ जो कि पाठकों को मनोरंजन या सूचना प्रदान कर सकते हैं। ऐसा इसलिए जरूरी है क्योंकि पाठक अख़बार पढ़ने में अपना वक्त लगाते हैं।'

1841–1857 की अवधि में यह अख़बार हर हफ्ते दो बार निकलता था, जिसमें अधिकतम आठ पन्ने होते थे।

इस समय में अख़बार की रिपोर्टिंग प्राथमिक रूप से ब्रिटिश समुदाय को लेकर केन्द्रित थी। जिसमें जन्म, मृत्यु और विवाह के समाचार, विभिन्न उत्तर भारत के स्टेशनों के आगमन–प्रस्थान सहित सेना की रेजिमेंटों की आवाजाही की सूचना, खेल आयोजनों और नृत्य सभाओं की घोषणाएं होती थीं। इस अख़बार की पाठक वर्ग मूल रूप से दिल्ली में रहने वाले अंग्रेज थे। आज के घर–घर में निशुल्क बँटने वाले विज्ञापन पत्र–पत्रिकाओं की तरह इस अख़बार में भी घोषणाएँ, किताबों, फर्नीचर, साबुन–तेल के विज्ञापनों सहित बैंक और कंपनी के व्यावसायिक विज्ञापन, किराए पर कमरे–घरों के इश्तहार होते थे। इतना ही नहीं, पेरिस के ताजातरीन फैशन के उत्पादों की खबर पहले पन्ने पर छपती थी। इसमें छपने वाले उत्पादों की जानकारी से पता चलता है कि तब के अंग्रेज भारत में रहने वाले यूरोपीय समुदाय की विशेष रुचि किन–किन वस्तुओं में थी।

अख़बार के दूसरे पन्ने पर सैनिक प्रतिष्ठानों की खबर छपती थी। जो कि अंग्रेज सेना के महत्व को दर्शाने के साथ भारत में उपनिवेशवादी शासन के चरित्र को उजागर करता है। तीसरे पन्ने पर दक्षिण एशिया की खबरें फिर जहाजरानी से जुड़ी खबरें, जिसमें पानी के जहाज से जुड़े समाचार, उनके आवागमन, जल मार्गों, पानी के रास्ते आने वाले सामान के लदान–उतार, बिक्री की जानकारी होती थी। घरेलू घटनाओं में व्यक्तियों के जन्म और मृत्यु के समाचार और उसके बाद स्थानीय समाचारों में दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्र के कार्यक्रमों की जानकारी होती थी। अख़बार के आखिरी दो पन्नों या कई बार अंतिम पृष्ठ को लिटरेरी गजट के शीर्षक से छापा जाता था जिसमें किताबों के चुनिंदा अंश और दूसरे साहित्यिक उत्पादों की जानकारी प्रकाशित की जाती थी।

1850 में विज्ञापनों के दूसरे पन्ने पर छपने के साथ इस अख़बार के शीर्षक और संयोजन में परिवर्तन आया।

वर्ष 1877 के बाद 'द दिल्ली गजट' एक दैनिक अख़बार के रूप में छपने लगा। इसके साथ ही विभिन्न बैंकों और बीमा कंपनियों के विज्ञापन पहले पन्ने पर छपने लगे। इनमें बड़ी संख्या में ऐसे विज्ञापन होते थे, जो कि पहाड़ी क्षेत्रों में नए बने बोर्डिंग स्कूलों, अंग्रेजी किताबों सहित शराब से लेकर किराए पर घरों को देने से संबंधित होते थे। साथ ही अंग्रेजी सेना और अंग्रेज नागरिकों की आबादी से जुड़े मामलों जैसे पेंशन फंड या नए पदोन्नति नियमों पर बहस पर विशेष रूप से लेख छापे जाते थे।

वर्ष 1877 के बाद 'द दिल्ली गजट' एक दैनिक अखबार के रूप में छपने लगा। इसके साथ ही विभिन्न बैंकों और बीमा कंपनियों के विज्ञापन पहले पन्ने पर छपने लगे। इनमें बड़ी संख्या में ऐसे विज्ञापन होते थे, जो कि पहाड़ी क्षेत्रों में नए बने बोर्डिंग स्कूलों, अंग्रेजी किताबों सहित शराब से लेकर किराए पर घरों को देने से संबंधित होते थे। साथ ही अंग्रेजी सेना और अंग्रेज नागरिकों की आबादी से जुड़े मामलों जैसे पेंशन फंड या नए पदोन्नति नियमों पर बहस पर विशेष रूप से लेख छापे जाते थे। खेल समाचार, पाँचवें पन्ने और टेलीग्राफ से मिलने वाले समाचार छठें पन्ने पर छपते थे, जिनमें रॉयटर्स की ओर से भेजी छोटी और यूरोपीय-अमेरिकी शहरों की घटनाओं की खबरें होती थीं।

खेल समाचार, पाँचवें पन्ने और टेलीग्राफ से मिलने वाले समाचार छठें पन्ने पर छपते थे, जिनमें रॉयटर्स की ओर से भेजी छोटी और यूरोपीय–अमेरिकी शहरों की घटनाओं की खबरें होती थीं। कभी कभार बैंकों और शेयर बाजार के ताजा आंकड़े भी छपते थे। यह स्वाभाविक है कि रायटर्स से उन्हीं शहरों के समाचार छपते थे, जहां समाचार एजेंसी के कार्यालय थे।

उल्लेखनीय है कि यह टेलीग्राफ से मिलने वाले समाचारों को प्रकाशित करने वाले देश के पहले कुछ चुनिंदा अख़बारों में से एक था।

वर्ष 1878 में टेलीग्राफ से मिलने वाले समाचारों के छठें पन्ने से पहले पन्ने पर स्थानांतरित होने पर अख़बार के भीतरी और बाहरी आकार में एक प्रमुख परिवर्तन आया। आज के हिसाब से पहला पन्ना बना जिसमें एक नए शीर्षक के साथ टेलीग्राफिक न्यूज छपा होता था। इस तरह से, अंतरराष्ट्रीय खबरों को जनसाधारण महत्व के समाचार के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। बेशक ऐसी खबरें कुछ पंक्तियों भर की बेहद

छोटी होती थी। इन खबरों के अलावा अंतर्राष्ट्रीय विनिमय और व्यावसायिक उपयोग के आंकड़ों वाले समाचार होते थे। अंतर्राष्ट्रीय समाचारों, फिर चाहे वह राजनीतिक, सामाजिक या व्यावसायिक हो, को विशेष महत्व दिया जाता था, जिसके कारण पहले पन्ने पर ऐसे समाचार प्रमुखता से छपते थे।

वर्ष 1880 के बाद से, अख़बार की विश्व सूची में टेलीग्राम के शीर्षक के साथ प्रेस कमिश्नर से ताजा समाचार के विशेष नोट छपता था, जिसमें सरकारी खबरें होती थीं। टेलीग्राफ से मिलने वाली खबरें पहले पन्ने पर छपती थी, जिसमें अंग्रेज भारत के सामान्य समाचार सहित अफगानिस्तान के मोर्चे पर समाचार लायक सूचनाएँ प्रकाशित होती थी। साथ ही अंग्रेजी साम्राज्य के दूसरे उपनिवेशों से जुड़ी खबरें भी छपती थीं जैसे तब दक्षिण अफ्रीका के अंग्रेज गर्वनर के ट्रांसवाल को शाही उपनिवेश का दर्जा दिए जाने का समाचार छपा था। जिससे पता चलता है कि तब अख़बार ऐसे समाचारों को महत्वपूर्ण मानने लगे थे। ऐसी खबरों के अलावा यूरोपीय शहरों और राजधानियों जैसे कुस्तुन्तुनिया, बर्लिन, रोम और सेंट पीटर्सबर्ग के राजनयिक मामलों के समाचार भी छपते थे। कुल मिलाकर इन समाचारों के साथ द दिल्ली गजट अख़बार का खाका शताब्दी के अंत तक जस का तस बना रहा।

वर्ष 1880 के बाद से, अखबार की विश्व सूची में टेलीग्राम के शीर्षक के साथ प्रेस कमिश्नर से ताजा समाचार के विशेष नोट छपता था, जिसमें सरकारी खबरें होती थीं। टेलीग्राफ से मिलने वाली खबरें पहले पन्ने पर छपती थी, जिसमें अंग्रेज भारत के सामान्य समाचार सहित अफगानिस्तान के मोर्चे पर समाचार लायक सूचनाएँ प्रकाशित होती थी। साथ ही अंग्रेजी साम्राज्य के दूसरे उपनिवेशों से जुड़ी खबरें भी छपती थीं जैसे तब दक्षिण अफ्रीका के अंग्रेज गर्वनर के ट्रांसवाल को शाही उपनिवेश का दर्जा दिए जाने का समाचार छपा था। जिससे पता चलता है कि तब अखबार ऐसे समाचारों को महत्वपूर्ण मानने लगे थे।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक 'द दिल्ली गजट' में छपने वाली खबरों, रिपोर्टों और टिप्पणियों से यह साफ हो जाता है कि अख़बार का पाठक वर्ग दक्षिण एशिया में अस्थायी रूप से रहने वाला अंग्रेज समुदाय था। इंग्लैंड में 19 वीं शताब्दी के दूसरे चरण में अस्तित्व में आए अख़बार का रंग–ढंग और तेवर उदारवादी मध्यम वर्ग के मूल्यों के अनुरूप था। यह वर्ग भारतीय सिविल सेवाओं और सेना में भर्ती होने वाले तबके का मूल स्रोत था। इस नए वर्ग की विशेष रूचि प्रजातंत्र से अधिक अंग्रेज राजशाही, संवैधानिक प्रश्नों और राजनीतिक आंदोलनों में अधिक थी। यही कारण है कि अख़बार में यूरोपीय राजशाही परिवारों और दरबारों की खबरें छपती थी जो कि भारतीय स्वामित्व वाले अख़बारों के उलट थी जो कि ऐसी खबरों में न के बराबर रुचि दिखाते थे।

अंग्रेज पाठकों के लिए मौजूदा शाही वफादारियों के अलावा अंग्रेजी साम्राज्य से जुड़ी खबरों में खास रुचि थी। यही कारण था कि दुनिया भर में फैले ब्रितानी साम्राज्य की सैनिक और राजनीतिक गतिविधियों और उसके महत्व को उजागर करते अधिकतम लेख छपते थे। इतना ही नहीं, अंग्रेज पुरुषों के खेलों में रूझान को देखते हुए समय–समय पर इंग्लैंड में होने वाले खेल आयोजनों की भी खबरें छपती थीं।

इस अख़बार में छपने वाली खबरों का चयन, प्रस्तुतिकरण और संयोजन, जिसमें –विज्ञापनों को दिए जाने वाले स्थान, रिपोर्टों और टिप्पणियों, टेलीग्राफिक समाचारों के प्रकाशन से लेकर शीर्षक का लगाया जाना शामिल है– से अंग्रेज भारत खासकर कलकत्ता, मुंबई और मद्रास में अंग्रेजों के स्वामित्व वाले अख़बारों के विकास की बानगी पता चलती हैं। एक तरह से कहा जा सकता है कि ये समाचार पत्र इंग्लैंड में छपने वाले अख़बारों की ही नकल थे। जबकि महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारतीय स्वामित्व वाले अख़बारों के परिप्रेक्ष्य से 'द दिल्ली गजट', द इंग्लिशमैन और 'द बाम्बे गजट' जैसे समाचार पत्र ले आउट और प्रस्तुतिकरण के हिसाब से अभिनव, विलक्षण और पाठकों का ध्यान आकर्षित करने के लिहाज से आधुनिक समझे जाते थे।

(नलिन चौहान)

हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष और प्रसिद्ध कवि विष्णु खरे का निधन

हिंदी साहित्य में अपनी तरह के अनोखे और खरे व्यक्तित्व, कवि, पत्रकार और अनुवादक विष्णु खरे का 19 सितंबर को निधन हो गया। वे 12 सितंबर से दिल्ली के जी.बी.पंत अस्पताल में आईसीयू में भर्ती थे। 11 सितंबर की देर रात या शायद 12 सितंबर की भोर उन्हें मस्तिष्क आघात हुआ था। उनके शरीर के बाएँ हिस्से को लकवा भी मार गया था। वे कोमा में चले गए थे और डाक्टरों के मुताबिक उसी स्थित में उन्हें दिल का दौरा पड़ा। वे 78 साल के थे।

दिल्ली सरकार ने विष्णु खरे को हाल ही में दिल्ली हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष नियुक्त किया था और इसी वजह से उनका फिर दिल्ली आना हुआ था। वरना कुछ साल पहले वे दिल्ली का सारा सरअंजाम समेटकर पहले अपने गृहनगर छिंदवाड़ा और फिर मुंबई चले गए थे। मुंबई में उनका परिवार है। बेटी प्रीति खरे, मशहूर अभिनेत्री हैं और बेटा अप्रतिम भी फिल्मों से जुड़ा है। उनकी छोटी बेटी जर्मनी में थीं। बीमारी की ख़बर पाकर पत्नी समेत पूरा परिवार दिल्ली आ गया था।

विष्णु खरे का अंतिम संस्कार 20 सितंबर को निगमबोध घाट स्थित सीएनजी शवदाहगृह में हुआ। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने सरकार की ओर से पुष्प अर्पित करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। अकादमी के सचिव जीतराम भट्ट तथा तमाम अन्य कर्मचारी भी अपने उपाध्यक्ष को अंतिम विदाई देने के लिए वहाँ मौजूद थे।

विष्णु खरे मयूर विहार के हिंदुस्तान अपार्टमेंट में किराये के एक कमरे में रहते थे। उन्हें ब्रेन स्ट्रोक हुआ, इसका पता 12 सितंबर की सुबह तब चला, जब दूधवाला आया। घर का दरवाजा खुला हुआ था। ब्रेन स्ट्रोक की जानकारी सबसे पहले उनके पड़ोसी और वरिष्ठ पत्रकार परवेज अहमद को हुई। वे पास के निजी अस्पताल में विष्णु जी को लेकर गए, लेकिन उसने हाथ खड़े कर दिए। हारकर उन्होंने उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया से संपर्क किया

जिन्होंने जी.बी.पंत अस्पताल ले जाने और सारी व्यवस्था को लेकर निश्चिंत रहने का आश्वासन दिया। परवेज जी उन्हें अस्पताल ले गए लेकिन सी.टी स्कैन आदि के बाद डॉक्टरों ने चिंता जाहिर की थी कि उन्हें लाने में विलंब हो गया है और स्थिति थोड़ी जटिल है। स्ट्रोक के छह घंटे के अंदर मरीज को दवाएँ न मिलें तो खून में जमा थक्का घुलाना मुश्किल हो जाता है।

हॉलाकि विष्णु जी देख पा रहे थे कि उनके साथ क्या हुआ। मित्रों को पहचान रहे थे और थोड़ा–बहुत बोल भी पा रहे थे। लेकिन धीरे–धीरे वे कोमा में चले गए और फिर उनका निधन हो गया।

विष्णु खरे का शुमार देश के बड़े हिंदी पत्रकारों में था। उन्होंने कई शीर्ष अख़बारों और पत्रिकाओं में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई थी। नवभारत टाइम्स से उनका लंबा जुड़ाव रहा। वे इस अख़बार के लखनऊ और जयपुर संस्करणों के संपादक भी रहे। लेकिन समय के साथ पत्रकार से ज्यादा उनकी पहचान हिंदी के एक अनोखे कवि और विचारक के रूप में हुई, जिसने कविता और विचार के तमाम पूर्व निर्धारित खाँचों को तोड़ा।

छिंदवाड़ा में 9 फरवरी 1940 को जन्मे विष्णु खरे ने शुरुआत में इंदौर और दिल्ली के कॉलेजों में पढ़ाया भी था, लेकिन फिर शब्दों की दुनिया में रम गए। 1960 में आया टी.एस. इलियट की कविताओं का अनुवाद "मरु प्रदेश और अन्य कविताएँ" उनका पहला प्रकाशन था और 1970 में प्रकाशित 'एक गैर रूमानी समय में' पहला काव्य संग्रह। 'खुद अपनी आँख से', 'सबकी आवाज की परदे में', 'पिछला बाकी' और 'काल और अवधि के दरमियान' उनके अन्य संग्रह हैं।

विष्णु खरे को फिनलैंड के राष्ट्रीय सम्मान 'नाइट ऑफ दी आर्डर ऑफ दी वाइट रोज' से भी सम्मानित किया गया था। इसके अतिरिक्त उन्हें रघुवीर सहाय सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, शिखर सम्मान, हिन्दी अकादमी, दिल्ली का 'साहित्यकार सम्मान' से भी सम्मानित किया गया था।

'पाठांतर' संग्रह में प्रकाशित उनकी यह कविता पढ़िए.. .लगेगा विष्णु खरे भविष्यदृष्टा कवि थे....जो कवि होता भी है–

नींद में

कैसे मालूम कि जो नहीं रहा
उसकी मौत नींद में हुई ?

कह दिया जाता है
कि वह सोते हुए शांति से चला गया

क्या सबूत है ?
क्या कोई था उसके पास उस वक्त
जो उसकी हर साँस पर नजर रखे हुए था
कौन कह सकता है कि अपने जाने के उस क्षण
वह जगा हुआ नहीं था
फिर भी उसने
आँखें बंद रखना ही बेहतर समझा
अब वह और क्या देखना चाहता था ?
उसने सोचा होगा कि किसी को आवाज देकर
या कुछ कहकर भी अब क्या होगा ?

या उसके आसपास कोई नहीं था
शायद उसने उठने की फिर कोशिश की
या वह कुछ बोला
उसने कोई नाम लिया

मुझे कभी कभी ऐसा लगा है
कि जिन्हें नींद में गुजर जाने वाला बताया जाता है
उसके बाद भी एक कोशिश करते होंगे
उठने की
एक बार और तैयार होने की
लेकिन उसे कोई देख नहीं पाता है

पता नहीं मुझे ऐसा शक क्यों है
कि कम से कम यदि मेरे साथ ऐसा हुआ
तो मैंने वैसे एक आखिरी कोशिश जरूर की होगी
जब साँस रुक जाने के बाद भी
नाखून कुछ देर तक बढ़ते रहते हैं
तो वैसा भी क्यों मुमकिन नहीं होता होगा
क्या जो चीजें देखी नहीं जातीं
वे होती ही नहीं?
लिहाजा मैं सुझाव देना चाहता हूँ
कि अगली बार अगर ऐसा कुछ हो
कि कहना पड़े कोई सोते सोते नहीं रहा
तो यह कहा जाए
कि पता नहीं चला वह कैसे गुजरा
जब वह नहीं रहा होगा
तब हम सब नींद में थे

क्या मालूम शायद वह ज्यादा सही हो ? ■

कविता के आकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र का टूटना

सबसे पहले यह जानकर दिलोदिमाग को आघात–सा लगा कि हिंदी के जाज्वल्यमान नक्षत्र विष्णु खरे दिवंगत हो गये। उन सरीखे अथक अध्यवसायी, मेधावी, अतिशय संवेदनशील, मूल्यनिष्ठ, प्रखर कवि–आलोचक और विचारक के न रहने से हिंदी कविता के आकाश में आभा अचानक काफी कम हो गयी है। रघुवीर सहाय के बाद जिन कुछ कवियों ने कविता का एक सर्वथा नया मुहावरा आविष्कृत, निर्मित और विकसित किया, उनमें वह अग्रगण्य थे। युवा कवियों की एक पूरी धारा ही उनके प्रभाव, प्रेरणा और प्रोत्साहन की रौशनी में रचनारत रही आयी है। कविता के अदम्य समर्थक विष्णु खरे ने उसके लिए एक बहुआयामी अवदान संभव किया–आलोचना, अनुवाद, संभाषण, साक्षात्कार, बहस वगैरह के विस्तृत परिसर में उनकी सक्रियता महज राष्ट्रीय नहीं, बल्कि विश्वव्यापी थी। अनेक विदेशी भाषाओं के साहित्य संसार में उनके काम की धमक और अनुगूँज सुनी जाती है। जर्मन कवियों की रचनाओं के अनुवाद का बरसों पहले जारी हुआ उनका संग्रह 'हम चीखते क्यों नहीं' आज तक एक मिसाल है। इसके शीर्षक में जो बेचैनी समायी हुई है, शायद वही उनके

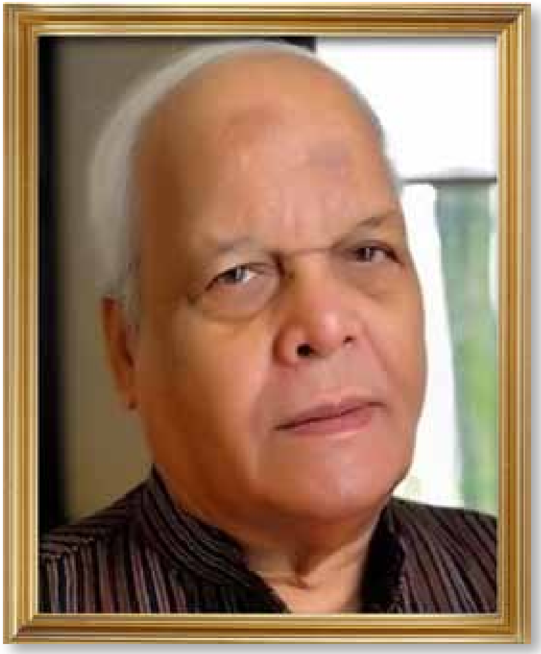

विष्णु खरे में श्रेष्ठ कविता को लेकर एक दुर्लभ और असमाप्य किस्म का लगाव था। इसीलिए कमतर रचनाशीलता और उसके अभ्यासी, महत्वाकांक्षी एवं दुराग्रही कवियों को वह बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। उनकी आलोचना एक संजीदा, बारीक विश्लेषण, समुज्ज्वल आक्रोश और अप्रत्याशित साहस से समृद्ध और धारदार थी। मूल्यों के पतन की किसी भी चेष्टा पर वह निर्मम और निर्भय कशाघात करते थे। इस प्रक्रिया में ऐसा नहीं कि वह हमेशा सही रहे हों या उनसे थोड़ी-सी अतियाँ और अन्याय न हुए हों। मगर जिनकी नाजायज महत्वाकांक्षा के लिए उनकी आलोचना या उपस्थिति मात्र वज्रपात की तरह थी।

व्यक्तित्व की भी केन्द्रीय विशेषता थी।

विष्णु खरे में श्रेष्ठ कविता को लेकर एक दुर्लभ और असमाप्य किस्म का लगाव था। इसीलिए कमतर रचनाशीलता और उसके अभ्यासी, महत्त्वाकांक्षी एवं दुराग्रही कवियों को वह बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। उनकी आलोचना एक संजीदा, बारीक विश्लेषण, समुज्ज्वल आक्रोश और अप्रत्याशित साहस से समृद्ध और धारदार थी। मूल्यों के पतन की किसी भी चेष्टा पर वह निर्मम और निर्भय कशाघात करते थे। इस प्रक्रिया में ऐसा नहीं कि वह हमेशा सही रहे हों या उनसे थोड़ी–सी अतियाँ और अन्याय न हुए हों। मगर जिनकी नाजायज महत्त्वाकांक्षा के लिए उनकी आलोचना या उपस्थिति मात्र वज्रपात की तरह थी, उन्होंने बड़ी चालाकी से इन्हीं गलतियों को रेखांकित करके उनकी एक नकारात्मक–सी छवि निर्मित और प्रचारित की और उनके रचनात्मक एवं वैचारिक अवदान के बेशकीमत पक्षों की सायास और भरसक उपेक्षा की। नतीजतन अपनी कविता और आलोचना में उन्होंने जो जोखिम उठाये, उनकी कीमत उन्हें चुकानी पड़ी। उन्हें अपने प्रियजनों एवं पाठकों, खास तौर पर कवि बिरादरी से आत्यंतिक

महत्त्व, सम्मान और आत्मीयता मिली, मगर शायद साहित्य संसार में उन्हें वह केन्द्रीयता और शीर्षस्थानीयता हासिल नहीं होने दी गयी, जिसके कि वह वास्तव में अधिकारी थे और हिंदी की तमाम प्रतिष्ठित संस्थाओं–अकादमियों –पत्रिकाओं–प्रकाशन–संस्थानों इत्यादि में उसके अनुरूप उन्हें अवसर मिले होते तो उनका अपना तो खैर क्या, साहित्य का बहुत भला हुआ होता और हिंदी कविता एवं आलोचना का उतना बुरा हाल न होता, जितना कि आज है।

विष्णु जी की शख़्सियत ऐसी थी कि लोग उनसे या तो प्यार करते थे या डरते थे। अपने निभ्रांत, दो–टूक और बेधक वक्तव्यों की बदौलत बीच की कोई स्थिति वह रहने नहीं देते थे और इससे जो ईमानदारी या पारदर्शिता उन्होंने अर्जित की थी, अपनी उस प्रतिष्ठा का उन्हें जरा सुख और गौरव भी महसूस होता था। मगर उनके काम में ऐसी अपरिहार्यता है कि निजी वजहों से नापसंद किये जाने के बावजूद उसकी अवज्ञा नहीं की जा सकती। बेर्टोल्ट ब्रेष्ट उनके प्रिय कवियों में–से थे और उन्होंने एक कविता लिखी है 'एक चीनी शेर की नक्काशी को देखकर।' शायद यह काव्य–न्याय ही है कि जब भी साहित्य–प्रेमियों को विष्णु खरे का ध्यान आयेगा, ब्रेष्ट की यह रचना याद जरूर आयेगी :

''तुम्हारे पंजे देखकर
डरते हैं बुरे आदमी
तुम्हारा सौष्ठव देखकर
खुश होते हैं अच्छे आदमी
यही मैं चाहूँगा सुनना
अपनी कविता के बारे में।''

उनकी एक कविता, जो मुझे सर्वाधिक प्रिय है, वह है 'एक कम।' आज न जाने क्यों यह घुमड़–घुमड़कर मेरे चित्त पर छा जा रही है, क्योंकि इसके लहजे में ही वह बात है, जिसके चलते मुझे बराबर यह लगता रहा है कि इसके बयान में भारत के सर्वहारा की ही नहीं, स्वयं कवि की आपबीती भी शामिल है। यह जितनी वस्तुनिष्ठ, उतनी ही मर्मस्पर्शी, अंततः स्तब्ध कर देनेवाली रचना है, खुद उनकी ही जिंदगी की तरह। सच तो यही है कि विष्णु खरे ने जीते–जी साहित्य संसार में 'अपने को हटा लिया था हर होड़ से', इसलिए अब जबकि वह नहीं हैं, हम कम–से–कम उस एक अप्रतिम कवि के न होने के अवसाद से घिरे तो रह ही सकते हैं और मुमकिन हो, तो सत्यनिष्ठा की जो राह उन्होंने दिखायी है, उसका यथाशक्ति अनुसरण करते हुए :

एक कम

1947 के बाद से
इतने लोगों को इतने तरीकों से
आत्मनिर्भर मालामाल और गतिशील होते
देखा है
कि अब जब आगे कोई हाथ फैलाता है
पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी के लिए
तो जान लेता हूँ
मेरे सामने एक ईमानदार आदमी,
औरत या बच्चा खड़ा है
मानता हुआ कि हाँ मैं लाचार हूँ कंगाल या कोढ़ी
या मैं भला चंगा हूँ और कामचोर और
एक मामूली धोखेबाज
लेकिन पूरी तरह तुम्हारे संकोच लज्जा परेशानी
या गुस्से पर आश्रित
तुम्हारे सामने बिलकुल नंगा निर्लज्ज
और निराकांक्षी
मैंने अपने को हटा लिया है हर होड़ से
मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं
मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम
कम से कम एक आदमी से तो निश्चिंत
रह सकते हो

(रघुवीर सहाय पता नहीं क्यों इस कविता को साग्रह सुनते थे, इसलिए उन्हीं की स्मृति को समर्पित)

(पंकज चतुर्वेदी)

लेखक हिंदी के प्रसिद्ध युवा कवि और आलोचक हैं।

दुनिया में मोहल्ला क्लीनिक जैसी योजना दूसरी नहीं-बान की मून

दिल्ली के चिकित्सा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव करने वाली मोहल्ला क्लीनिक परियोजना पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच रही है। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान की मून ने नार्वे की पूर्व प्रधानमंत्री ग्रो हार्लेम ब्रंटलैंड के साथ दिल्ली में मोहल्ला क्लीनिक का दौरा किया और इस योजना की जमकर तारीफ़ की। ब्रंटलैंड विश्व स्वास्थ्य संगठन की पूर्व महानिदेशक भी हैं। उन्होंने कहा इस योजना को वैश्विक स्तर पर अपनाया जाना चाहिए।

7 सितंबर को दोनों अतिथियों ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और स्वास्थ्य मंत्री सतेन्द्र जैन के साथ पश्चिम दिल्ली के पश्चिम विहार में पीरागढ़ी मोहल्ला क्लीनिक और पोलीक्लीनिक का दौरा किया। उनके साथ स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन भी थे।

सयुंक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून मोहल्ला क्लीनिक का कामकाज देखने के बाद काफ़ी प्रभावित लगे। उन्होंने कहा कि वे इस बात से प्रभावित हैं कि गरीब और कमजोर लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए दिल्ली सरकार कितनी गहराई से काम कर रही है। उन्होंने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की दृष्टि को सराहते हुए कहा कि पूरी दुनिया में उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं के मॉडल देखे हैं लेकिन बेझिझक कह सकते हैं कि मोहल्ला क्लीनिक सबसे बेहतर है। उन्होंने उम्मीद जताई है कि केंद्र सरकार के स्तर पर भी इस परियोजना को अधिकाधिक समर्थन मिलेगा। पूर्व यूएन महासचिव ने सुझाव दिया कि भारत में स्वास्थ्य सेवाओं पर जीडीपी का एक प्रतिशत होने वाला खर्च 2021 तक 2.5 प्रतिशत तक किया जाये।

बान की मून और ग्रो हार्लेम ब्रंटलैंड वैश्विक नेताओं के लंदन स्थित संगठन 'द एल्ड़र्स' के प्रतिनिधिमण्डल के हिस्से के रूप में भारत आए थे। यह संगठन शांति, न्याय और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने के लिए अपने सामूहिक अनुभव और संसाधनों को साझा करता है।

विश्व स्वस्थ्य संगठन के महानिदेशक के रूप में पूरी दुनिया में स्वास्थ्य परियोजनाओं से जुड़ी रह चुकीं हार्लेम ब्रंटलैंड ने कहा कि मोहल्ला क्लीनिक और पोलीक्लीनिक ने प्रभावशाली काम किया है और इसे और विकसित किए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मोहल्ला क्लीनिक परियोजना को पूरे देश में लागू किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि चीन जैसे देश स्वास्थ्य सेवाओं पर ज़्यादा खर्च कर रहे हैं, भारत में भी इसे बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'यहां किए गए प्रभावशाली काम को देखकर मैं बेहद खुश हूं।' इस अवसर पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि इस समय दिल्ली में 189 मोहल्ला क्लीनिक परिचालित हो रहे हैं। आने वाले कुछ महीनों में यह संख्या 1000 हो जाएगी। ■

शहीद नरेंद्र सिंह के परिवार को मिलेगी एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि

ड्यूटी पर शहीद होने वाले सैनिकों के सम्मान को लेकर दिल्ली सरकार बेहद संवेदनशील है। हाल में सरकार ने शहीदों के परिवार को एक करोड़ रुपये सम्मान राशि देने वाली योजना में महत्वपूर्ण संशोधन किया है। इस योजना में वह जवान भी आएँगे, जिन का परिवार पिछले 5 सालों से दिल्ली में रह रहा है। इसके लिए यह जरूरी नहीं है की वह दिल्ली में पैदा हुआ हो।

राजस्व मंत्री कैलाश गहलोत ने बताया कि अभी तक ऐसे शहीदों को सम्मान दिया जाता था, जिन का स्थायी आवास दिल्ली हो या शहीद होने के दौरान उसके परिवार दिल्ली में रहे हों। लेकिन अब वह परिवार भी इसके दायरे में आएँगे, जो पिछले पाँच सालों से दिल्ली में निवास कर रहे हों। शहीद नरेंद्र सिंह का स्थायी पता हरियाणा का है, लेकिन उनका परिवार पिछले 10–15 सालों से दिल्ली में रह रहा है। अब नरेंद्र सिंह के परिवार को एक करोड़ की सम्मान राशि दी जा सकेगी। कैलाश गहलोत ने बताया कि दिल्ली सरकार के ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स के पास ऐसे करीब 20–21 केस है, जिन पर विचार किया जा रहा है। और इन पर जल्द फैसला लिया जाएगा।

दिल्ली कैबिनेट के इस अहम फ़ैसले के बाद पाकिस्तानी सैनिको के हाथ बेरहमी से मारे गए, शहीद नरेंद्र सिंह के परिवार को भी एक करोड़ की सम्मान राशि मिल सकेगी। साथ ही उनके घर के एक सदस्य को सरकारी नौकरी भी दी जाएगी। शहीद होने वाले सेना के जवानों, ड्यूटी पर मार जाने वाले दिल्ली पुलिस और फायर सर्विस के कर्मियों के परिवारों को दिल्ली सरकार कि ओर से एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि दी जाएगी।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इससे पहले हरियाणा के सोनीपत जिले के थाना कलां गाँव में शहीद नरेंद्र सिंह के परिजनों से मुलाक़ात की थी और शहीद नरेंद्र सिंह के सम्मान में दिल्ली में कानून बदलने कि बात की थी।

झंडा गीत

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा
सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम सुधा सरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला
मातृभूमि का तन–मन सारा
झंडा ऊँचा......

स्वतंत्रता के भीषण रण में
लखकर बढ़े जोश क्षण–क्षण में
काँपे शत्रु देख कर मन में
मिट जाए भय संकट सारा
झंडा ऊँचा...

इस झंडे के नीचे निर्भय
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय
बोलें भारत माता की जय
स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा ।।
झंडा ऊँचा....

आओ प्यारे वीरों, आओ
देश धर्म पर बलि–बलि जाओ
एक साथ सब मिलकर गाओ
प्यारा भारत देश हमारा ।।
झंडा ऊँचा...

इसकी शान न जाने पाए
चाहे जान भले ही जाए
विश्वविजय करके दिखलाएँ
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ।।
झंडा ऊँचा....

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा ।।

रचनाकाल : 1924

झंडा गीत के रचनाकार श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान धूम मचाने वाले झण्डा गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' लिखने वाले श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' (जन्म: 16 सितम्बर 1893 – मृत्यु: 10 अगस्त 1977) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक सेनानी, पत्रकार, समाजसेवी एवं अध्यापक थे। पार्षद जी 1921 में दैनिक प्रताप के प्रखर संपादक और मशहूर स्वतंत्रता सेनानी गणेश शंकर विद्यार्थी के संपर्क में आये और स्वतंत्रता आन्दोलन के सिपाही बन गए। उन्होंने एक व्यंग्य रचना लिखी जिसके लिये तत्कालीन अंग्रेज़ी सरकार ने आपके ऊपर 500 रूपये का जुर्माना लगाया।

उन दिनों गाँधी जी के आह्वान पर असहयोग आंदोलन काफी ऊफान पर था। काँग्रेस के पास अपना झंडा था लेकिन कोई झंडा गीत नहीं था। पार्षद जी ने 1924 में झंडागान की रचना की जिसे 1925 में कानपुर में कांग्रेस के सम्मेलन में पहली बार झंडारोहण के समय सामूहिक रूप से गाया गया। आने वाले दिनों में यह आज़ादी का तराना बन गया। 1938 में सुभाषचंद्र बोस की अध्यक्षता में हरिपुरा में हुए काँग्रेस अधिवेशन में इसे औपचारिक रूप से स्वीकार कर लिया गया। पार्षद जी ने 1952 में लाल क़िले से प्रसिद्ध 'झंडा गीत' गाया था।

गोवा प्रेस प्रत्यायन समिति के प्रतिनिधियों ने की दिल्ली सरकार के सचिव (जन-सम्पर्क) से भेंट

गोवा प्रेस प्रत्यायन समिति के सदस्यों के एक प्रतिनिधिमण्डल ने सितम्बर माह 2018 में दिल्ली सरकार के जनसंपर्क सचिव डा0 जयदेव षड़ंगी से भेंट कर पत्रकारों के कल्याण से जुड़े विभिन्न मुददों पर चर्चा की। इस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व गोवा प्रेस प्रत्यायन समिति के अध्यक्ष श्री राजू नायक, सम्पादक (लोकमत) ने किया। प्रतिनिधिमण्डल में गोवा सरकार के सूचना एवं प्रचार निदेशालय के निदेशक श्री टी.एस. सावंत और सूचना अधिकारी श्री जोन सहित विभिन्न न्यूज संस्थानों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

इस मुलाकात के दौरान पत्रकारों के हितों से जुड़े मामलों, जैसे कि चिकित्सा सुविधा, पार्किंग सुविधा, बस–रेल यात्रा सुविधा पर व्यापक चर्चा की गई।

डा0 जयदेव षड़ंगी ने बताया कि निदेशालय वर्तमान में दिल्ली सरकार से प्रत्यायित सभी पत्रकारों को निशुल्क चिकित्सा सुविधा, निशुल्क पार्किंग सुविधा और दिल्ली सरकार की बसों में निशुल्क यात्रा सुविधा उपलब्ध करा रहा है।

डा0 जयदेव षड़ंगी ने आशा प्रकट की कि दो या उससे अधिक सरकारी विभागों के बीच इस प्रकार के नीतिगत विषयों एवं उनके क्रियान्वयन को लेकर इस प्रकार के विचार विमर्श नियमित आधार पर होने चाहिए जिससे सरकारी नियमों और नीतियों को लेकर विभिन्न राज्य सरकारों में कार्य समानता एवं एकरूपता कायम हो सके।

उन्होंने प्रतिनिधिमण्डल को बताया कि माननीय उच्चतम न्यायालय के सरकारी विज्ञापनों को लेकर लिए गये निर्णय और तय किये गये मापदंडों के आधार पर इस निदेशालय ने एक तयशुदा मानक प्रक्रिया अपनाई है। इस प्रक्रिया के तहत् संबंधित विभाग अध्यक्ष को विज्ञापन जारी करने के लिए एक प्रमाण पत्र देना पड़ता है जिसमें

विज्ञापन की सामग्री, फोटो, विषयवस्तु और आकार के उच्चतम न्यायालय के विज्ञापन संबंधी निर्णय के अनुरूप होने के बात प्रमाणित करनी पड़ती है। इसके उपरांत ही यह निदेशालय विज्ञापन जारी करता है।

दिल्ली सरकार के सूचना एवं प्रचार निदेशालय के अधिकारी श्री नलिन चौहान, श्री कंचन आजाद, श्री चंदन कुमार, श्री अमित कुमार, श्रीमती उर्मिला बैनिवाल, श्री गोविन्द, श्री मनीष कुमार व अन्य अधिकारी इस मौके पर उपस्थित थे। ■

माननीय उच्चतम न्यायालय के सरकारी विज्ञापनों को लेकर लिए गये निर्णय और तय किये गये मापदंडों के आधार पर इस निदेशालय ने एक तयशुदा मानक प्रक्रिया अपनाई है। इस प्रक्रिया के तहत् संबंधित विभाग अध्यक्ष को विज्ञापन जारी करने के लिए एक प्रमाण पत्र देना पड़ता है जिसमें विज्ञापन की सामग्री, फोटो, विषयवस्तु और आकार के उच्चतम न्यायालय के विज्ञापन संबंधी निर्णय के अनुरूप होने के बात प्रमाणित करनी पड़ती है। इसके उपरांत ही यह निदेशालय विज्ञापन जारी करता है।

72ਵਾਂ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਦਿਵਸ

ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਸੱਚੀ ਜੈ ਦੇ ਲਈ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਲਿਆਉਣੀ ਹੋਵੇਗੀ - ਕੇਜਰੀਵਾਲ

ਭਾਰਤ ਦੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਅੰਦੋਲਨ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਕੇਂਦਰੀ ਭੂਮਿਕਾ ਸੀ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਦਾ ਰੁਤਬਾ ਰਖਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਸ਼ਹਿਰ ਇਸ ਦੀ ਵਰੇਗੰਢ ਨੂੰ ਧੂੰਮ ਧਾਮ ਨਾਲ ਮਨਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਰ 72ਵੇਂ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦਿਹਾੜੇ ਦੇ ਮੌਕੇ ਤੇ ਵੀ ਇਹ ਨਜ਼ਾਰਾ ਸੀ। ਛਤਰਸਾਲ ਸਟੇਡੀਅਮ ਵਿਚ ਹੋਏ ਇਕ ਵੱਡੇ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਤਿਰੰਗਾ ਲਹਿਰਾਕੇ ਸਾਰੇ ਦੇਸ਼ ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦਿਹਾੜੇ ਦੀ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ।

ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਮੌਕਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰਨ ਦਾ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਲਈ ਖੂਨ ਵਹਾਇਆ, ਤਸੀਹੇ ਸਹੇ ਅਤੇ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਏ। ਨਾਲ ਹੀ ਖੁਦ ਤੋਂ ਪੁਛਣ ਦਾ ਵੀ ਮੌਕਾ ਹੈ ਕਿ ਕੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੇ ਜੋ ਸੁਫ਼ਨਾ ਦੇਖਿਆ ਸੀ, ਉਹ ਪੂਰਾ ਹੋ ਗਿਆ? ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਲੰਬਾ ਸਮਾਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਵਿਸ਼ਵ ਯੁਧ ਵਿਚ ਜਪਾਨ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਸ਼ਟ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ। ਨਾਗਾਸਾਕੀ ਅਤੇ ਹਿਰੋਸ਼ਿਮਾ ਉਤੇ ਬੰਬ ਸੁਟੇ ਗਏ ਸਨ। ਲੇਕਿਨ ਉਸ ਦੇ 20-25 ਸਾਲ ਦੇ ਅੰਦਰ ਜਪਾਨ ਵਾਪਸ ਖੜਾ ਹੋ ਗਿਆ। ਖੂਬ ਤਰੱਕੀ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਅੱਜ ਸਾਡੇ ਤੋਂ ਕਿਤੇ ਅੱਗੇ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਅਜ਼ਾਦ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਕਈ ਹੋਰ ਐਸੇ ਰਾਸ਼ਟਰ ਹਨ, ਕਈ ਹੋਰ ਐਸੇ ਦੇਸ਼ ਹਨ ਜੋ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਅਜ਼ਾਦ ਹੋਏ। ਲੇਕਿਨ ਅੱਜ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਸਾਡੇ ਤੋਂ ਕਿਤੇ ਅੱਗੇ ਨਿਕਲ ਗਏ। ਐਸਾ ਕਿਉਂ ਹੋਇਆ?

ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਦ ਉਹ ਰਾਜਨੀਤੀ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਆਏ ਸਨ ਤਾਂ ਅਕਸਰ ਇਸ ਸਵਾਲ ਨਾਲ ਜੂਝਦੇ ਸਨ ਕਿ ਭਾਰਤ ਪਿਛੜਿਆ ਕਿਉਂ ਰਹਿ ਗਿਆ? ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਲੋਕ ਅਨਪੜ੍ਹ ਕਿਉਂ ਰਹਿ ਗਏ? ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਲੋਕ ਗਰੀਬ ਕਿਉਂ ਰਹਿ ਗਏ? ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਕਿਸਾਨ ਅੱਜ ਵੀ ਆਤਮਹਤਿਆ ਕਿਉਂ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ? ਆਖਿਰ ਸਾਡੇ ਵਿਚ ਕਮੀ ਕਿਉਂ ਹੈ? ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਇੰਨੇ ਇੰਟੇਲਿਜੇਂਟ ਲੋਕ ਹਨ, ਇੰਨੇ ਚੰਗੇ ਲੋਕ ਹਨ, ਈਮਾਨਦਾਰ ਲੋਕ ਹਨ, ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਨਦੀਆਂ ਹਨ, ਪਹਾੜ ਹਨ, ਜੰਗਲ ਹਨ, ਫਿਰ ਸਾਡਾ ਦੇਸ਼ ਪਿਛੜਿਆ ਕਿਉਂ ਰਹਿ ਗਿਆ? ਲਗਦਾ ਸੀ ਕਿ ਜਰੂਰ ਕੁਝ ਨਾ ਕੁਝ ਕਾਰਨ ਹੋਣਗੇ ਜੋ ਸਰਕਾਰਾਂ ਕੁਝ ਕਰ ਨਹੀਂ ਪਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਲੇਕਿਨ ਸਰਕਾਰ ਵਿਚ ਆਉਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਤਿੰਨ ਸਾਲ ਦਾ ਅਨੁਭਵ ਦਸਦਾ ਹੈ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਬੇਮਿਸਾਲ ਵਿਕਾਸ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਵਿਕਾਸ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਚਰਚਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣ ਚੁਕੀ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਪਿਛਲੇ ਤਿੰਨ ਸਾਲ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਕਾਇਆ ਪਲਟ ਹੋਇਆ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ ਕਿਤੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਬੇਹਤਰ ਆ ਰਹੇ ਹਨ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਨਾਮ ਰੋਸ਼ਨ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ ਕੱਢ-ਕੱਢ ਕੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਭਰਤੀ ਕਰਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਬਣ ਰਹੇ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਚਰਚਾ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਦਾ ਕਾਇਆ ਪਲਟ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਵਿਚ ਸਾਰੀਆਂ ਦਵਾਈਆਂ, ਸਾਰੇ ਟੈਸਟ, ਸਾਰਾ ਇਲਾਜ, ਸਾਰੇ ਆਪਰੇਸ਼ਨ, ਸਾਰੀ ਸਰਜਰੀ ਸਭ ਮੁਫ਼ਤ ਕਰ ਦਿਤੇ ਗਏ ਹਨ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਅੱਜ ਬਿਜਲੀ ਪੂਰੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਸਸਤੀ ਮਿਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਅੱਜ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ 24 ਘੰਟੇ ਬਿਜਲੀ ਮਿਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਲੋਕ

ਇਨਵਰਟਰ ਦਾ ਨਾਮ ਭੁਲ ਗਏ ਬੈਟਰੀ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀਆਂ ਦੁਕਾਨਾਂ ਬੰਦ ਹੋ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਅੱਜ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਘਰ-ਘਰ ਪਾਣੀ ਪਹੁੰਚਾਇਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਅੱਜ ਸਭ ਤੋਂ ਸਸਤੀ ਬਿਜਲੀ ਮਿਲ ਰਹੀ ਹੈ, ਸਭ ਤੋਂ ਸਸਤਾ ਪਾਣੀ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਪਾਣੀ ਮੁਫ਼ਤ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਐਸਾ ਪੂਰੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਹੋ ਸਕਦਾ ਸੀ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜੇਕਰ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਵਿਦਿਆ ਦੇ ਦਿਤੀ ਜਾਏ, ਚੰਗੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਾ ਦਿਤਾ ਜਾਏ, ਚੰਗੇ ਕਾਲਜ ਵਿਚ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਦਿਤੀ ਜਾਏ, ਤਾਂ ਪੂਰੀ ਸਿਰਫ ਇਕ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਗਰੀਬੀ ਅਤੇ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰੀ ਵੀ ਦੂਰ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਰਤ ਕੇਵਲ ਇਕ ਹੀ ਹੈ ਕਿ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਖਤਮ ਹੋਵੇ। ਉਹ 24 ਘੰਟੇ, ਰਾਤ ਦਿਨ ਕੇਵਲ ਇਕ ਹੀ ਗਲ ਸੋਚਦੇ ਹਨ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਕਿਵੇਂ ਹੋਵੇਗਾ? ਦੇਸ਼ ਅੱਗੇ ਕਿਵੇਂ ਵਧੇਗਾ? ਸਾਡੇ ਬੱਚੇ ਕਿਵੇਂ ਪੜ੍ਹਨਗੇ? ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਵਿਚ ਚੰਗੀਆਂ ਸਹੂਲਤਾਂ ਕਿਵੇਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਣਗੀਆਂ? ਰਾਤ-ਦਿਨ ਇਕ ਹੀ ਸੁਫ਼ਨਾ ਦੇਖਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਾਡੀ ਪਿਆਰੀ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ, ਸਾਡਾ ਪਿਆਰਾ ਭਾਰਤ, ਦੇਸ਼ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਨੰਬਰ 1 ਦੇਸ਼ ਕਿਵੇਂ ਬਣੇ। ਸਾਡਾ ਸੁਫ਼ਨਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਇੰਸ ਅਤੇ ਟੈਕਨਾਲੋਜੀ ਵਿਚ, ਵਿਗਿਆਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਸਾਡਾ ਦੇਸ਼ ਅਮਰੀਕਾ ਨੂੰ ਪਿਛੇ ਛੱਡੇ।

ਜੇਕਰ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਵਿਦਿਆ ਦੇ ਦਿਤੀ ਜਾਏ, ਚੰਗੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਾ ਦਿਤਾ ਜਾਏ, ਚੰਗੇ ਕਾਲਜ ਵਿਚ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਦਿਤੀ ਜਾਏ, ਤਾਂ ਪੂਰੀ ਸਿਰਫ ਇਕ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਗਰੀਬੀ ਅਤੇ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰੀ ਵੀ ਦੂਰ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਰਤ ਕੇਵਲ ਇਕ ਹੀ ਹੈ ਕਿ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਖਤਮ ਹੋਵੇ। ਉਹ 24 ਘੰਟੇ, ਰਾਤ ਦਿਨ ਕੇਵਲ ਇਕ ਹੀ ਗਲ ਸੋਚਦੇ ਹਨ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਕਿਵੇਂ ਹੋਵੇਗਾ?

ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਭਾਰਤ ਦੀ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸਭਿਅਤਾ ਦੀ ਯਾਦ ਦਿਵਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਭਾਰਤ ਦੇ ਮਹਾਨ ਵਿਗਿਆਨਿਕ ਆਰੀਆਭੱਟ ਨੇ ਦੁਨੀਆਂ ਨੂੰ ''0'' (ਜ਼ੀਰੋ) ਦਿੱਤਾ। ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕੇਲਕੂਲਸ, ਅਲਜੇਬਰਾ, ਡੇਸਿਮਲ ਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਭਾਰਤ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਸੀ। 2600 ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਸੁਸ਼ਰੁਤ ਨਾਮ ਦੇ ਇਕ ਮਹਾਨ ਵਿਗਿਆਨਕ ਨੇ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਪਹਿਲੀ ਪਲਾਸਟਿਕ ਸਰਜਰੀ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮੋਤਿਆਬਿੰਦ ਦਾ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਫਿਰ ਅੱਜ ਐਸਾ ਕੀ ਹੋ ਗਿਆ ਕਿ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੰਦਰ ਰਿਸਰਚ ਬੰਦ ਹੋ ਗਈ? ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੰਦਰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਗਿਆਨਕ ਤਜ਼ਰਬੇ ਬੰਦ ਹੋ ਗਏ? ਅੱਜ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਐਸੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਿਥੇ ਹਿੰਦੂਆਂ ਅਤੇ ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਦੰਗੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਥੇ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਸਭ ਤੋਂ ਗਲਤ ਕੰਮ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਲੇਕਿਨ ਸਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਨਾਲ ਤਸਵੀਰ ਬਦਲ ਰਹੀ ਹੈ।

ਆਉਂਦੇ ਹਨ, ਵੈਸੇ ਹੀ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਦੇ ਖਣ ਦੇ ਲਈ ਆ ਰਹੇ ਹਨ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੇ ਗਏ ''ਹੈਪੀਨੈਸ ਕੇਰੀਕੁਲਮ'' ਦੀ ਚਰਚਾ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਕਸਰ ਅਸੀਂ ਲੋਕ ''ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ'' ਬੋਲਦੇ ਹਨ। ਲੇਕਿਨ ਕੇਵਲ ਨਾਰਾ ਲਗਾਉਣ ਨਾਲ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਵਾਲੀ। ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਤਦ ਹੋਵੇਗੀ, ਜਦ ਸਾਡੇ ਹਰ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ। ਜਦ ਹਿੰਦੂ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ, ਜਦ ਕ੍ਰਿਸ਼ਚਿਯਨ

ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ, ਜਦ ਮੁਸਲਮਾਨ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ, ਜਦ ਸਿੱਖ ਦੇ, ਜੈਨ ਦੇ, ਬੋਧ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ। ਜਦ ਬਨੀਆ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ, ਜਦ ਮੋਚੀ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇ ਗੀ, ਧੋਬੀ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ, ਜਦ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ, ਚਾਹੇ ਇਸ ਜਾਤੀ ਦਾ ਹੋਵੇ ਚਾਹੇ ਉਸ ਜਾਤੀ ਦਾ ਹੋਵੇ, ਹਰ ਜਾਤ ਦੇ ਹਰ ਧਰਮ ਦੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ ਤਦ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਹੋਵੇਗੀ। ਸਾਰੇ ਸਕੂਲ ਚੰਗੇ ਹੋਣਗੇ ਤਦ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਦ ਸਾਰੇ ਹਸਪਤਾਲ ਚੰਗੇ ਹੋਣਗੇ, ਤਦ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਦ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੰਦਰ ਖੂਬ ਫੈਕਟਰੀਆਂ ਬਣਨਗੀਆਂ, ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੰਦਰ ਖੂਬ ਵਪਾਰ ਵਧੇਗਾ, ਹਰ ਨੌਜਵਾਨ ਨੂੰ ਨੌਕਰੀ ਮਿਲੇਗੀ ਤਦ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਦ ਐਸਾ ਕੋਈ ਦੇਸ਼ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇ ਗੀ ਜੋ ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਖੜਾ ਹੋ ਕੇ ਅੱਗੇ ਦਿਖਾ ਸਕੇ, ਤਦ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਦ ਇਸ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਸਾਰੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਚੰਗੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਹੋਣਗੇ, ਚੰਗੇ ਦੋਸਤ ਹੋਣਗੇ ਤਦ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਦ ਇਸ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੰਦਰ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨ ਮਿਲੇਗਾ, ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲੇਗੀ ਤਦ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਦ ਇਸ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਕਿਸਾਨ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨ ਮਿਲੇਗਾ, ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਸਭ ਫਸਲਾਂ ਦਾ ਰੇਟ ਮਿਲੇਗਾ, ਤਦ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ ਹੋਵੇਗੀ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅੱਜ ਤੋਂ ਡੇਢ-ਦੋ ਹਜ਼ਾਰ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਮਸ਼ਹੂਰ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਵਾਸ਼ਿੰਗਟਨ ਜਾਂ ਨਿਊਯਾਰਕ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਨਾਲੰਦਾ ਵਿਚ ਸੀ। ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਇਹ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਨੰਬਰ 1 ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਸੀ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ। ਲੇਕਿਨ ਅੱਜ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀਆਂ ਟਾਪ 10 ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਵੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦਾ ਨਾਮ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸੁਫ਼ਨਾ ਹੈ ਕਿ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਟਾਪ 10 ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਘਟ ਤੋਂ ਘਟ ਤਿੰਨ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਭਾਰਤ ਦੀਆਂ ਹੋਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੋ ਤਿੰਨ ਹਜ਼ਾਰ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਹੜੱਪਾ ਵਿਚ ਮੋਹਨਜੋਦਾੜੋ ਵਿਚ, ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਬੇਹਤਰੀਨ ਸੀਵਰ ਸਿਸਟਮ ਸੀ। ਲੇਕਿਨ ਹੁਣ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਇਕ ਪ੍ਰਭਾਵੀ ਸੀਵਰ ਸਿਸਟਮ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਬਹਰਹਾਲ, ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਸੀਵਰ ਸਿਸਟਮ ਬਦਲਣ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਹੋ ਚੁਕੀ ਹੈ। ਅਗਲੇ ਪੰਜ ਸਾਲ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਪੂਰੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਬੇਹਤਰੀਨ ਸੀਵਰ ਸਿਸਟਮ ਹੋਵੇਗਾ।

ਅੱਜ ਤੋਂ ਡੇਢ-ਦੋ ਹਜ਼ਾਰ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਮਸ਼ਹੂਰ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਵਾਸ਼ਿੰਗਟਨ ਜਾਂ ਨਿਊਯਾਰਕ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਨਾਲੰਦਾ ਵਿਚ ਸੀ। ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਇਹ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਨੰਬਰ 1 ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਸੀ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ। ਲੇਕਿਨ ਅੱਜ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀਆਂ ਟਾਪ 10 ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਵੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦਾ ਨਾਮ ਨਹੀਂ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਸਾਬਕਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਸਵਰਗੀ ਲਾਲ ਬਹਾਦੁਰ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਨਾਮ ਦਿਤਾ ਸੀ- ''ਜੈ ਜਵਾਨ ਜੈ ਕਿਸਾਨ''। ਲਾਲ ਬਹਾਦੁਰ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਆਪਣੀ ਸਾਦਗੀ ਦੇ ਲਈ ਆਪਣੀ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਦੇ ਲਈ ਜਾਣੇ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਸਿਪਾਹੀ ਸਰਹੱਦ ਤੇ ਆਪਣੀ ਜਾਨ ਦੀ ਬਾਜੀ ਲਗਾ ਕੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰੱਖਿਆ

ਕਰਦਾ ਹੈ। ਵੈਸੇ ਹੀ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਕਿਸਾਨ ਦੁਪਹਿਰ ਦੀ ਕਰੜੀ ਧੁਪ ਹੋਵੇ, ਚਿਲਚਿਲਾਉਂਦੀ ਠੰਡ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਬਾਰਿਸ਼, ਖੂਨ ਪਸੀਨਾ ਵਹਾ ਕੇ, ਦੇਸ਼ ਦੇ ਲਈ ਅੰਨ ਉਪਜਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜਵਾਨ ਅਤੇ ਕਿਸਾਨ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਨਮਾਨ ਦਿਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਲੈ ਕੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨ ਦੇਣ ਦੇ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਕ-ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਦੇਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਸੈਨਿਕ ਹੋਣ ਜਾਂ ਦਿੱਲੀ ਪੁਲੀਸ ਦਾ ਜਾਂਬਾਜ ਸਿਪਾਹੀ ਜਾਂ ਅੱਗੇ ਬੁਝਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਜਾਨ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਫਾਇਰ ਸਰਵਿਸ ਦੇ ਲੋਕ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਭ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦੇ ਬਾਅਦ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਅਤੇ ਇਕ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਨੌਕਰੀ ਦੇਵੇਗੀ।

ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਆਤਮਹਤਿਆ ਦੀ ਖਬਰ ਤੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਦਰਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਮਦਦ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਨਵਾਂ ਪਲਾਨ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਹਰ ਕਿਸਾਨ ਦੇ ਖੇਤ ਵਿਚ, ਤਿੰਨ-ਚਾਰ ਮੀਟਰ ਦੀ ਉਚਾਈ ਤੇ ਸੋਲਰ ਪੈਨਲ ਲਗਾਇਆ ਜਾਏਗਾ, ਇਸ ਨਾਲ ਕਿਸਾਨ ਨੂੰ ਇਕ ਲੱਖ ਰੁਪੈ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਦੀ ਸਾਲ ਵਿਚ ਵਾਧੂ ਆਮਦਨੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਅੱਜ ਕਿਸਾਨ ਨੂੰ 30 ਤੋਂ 40 ਹਜ਼ਾਰ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਦੀ ਆਮਦਨੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਉਸ ਦੀ ਆਮਦਨੀ 3 ਤੋਂ 4 ਗੁਣਾ ਹੋ ਜਾਏਗੀ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਕਾਫੀ ਵਕਤ ਬੀਤ ਚੁਕਾ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਉਨਾਂ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਵਿਕਾਸ ਕੰਮਾਂ ਨੂੰ ਤੇਜੀ ਨਾਲ ਪੂਰਾ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੇ ਰੰਗਾਰੰਗ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ। ਭਾਰਤ ਦੇ ਗੌਰਵਸ਼ਾਲੀ ਅਤੀਤ ਦੀ ਝਾਂਕੀ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਨਾਲ ਭਰੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮਾਂ ਨੇ ਦਰਸ਼ਕਾਂ ਦਾ ਮਨ ਮੋਹ ਲਿਆ। ■

ਉਤਰ ਪਰਬ ਜ਼ਿਲੇ ਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਪਤਿਭਾ ਵਿਕਾਸ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਤੋਹਫ਼ਾ

ਹਰ ਜੋਨ ਵਿਚ ਖੁਲ੍ਹੇਗਾ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਵਿਕਾਸ ਸਕੂਲ

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਉਤਰ-ਪੂਰਬੀ ਜ਼ਿਲੇ ਦੇ ਇਕ ਸਰਕਾਰੀ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਵਿਕਾਸ ਸਕੂਲ ਦਾ ਤੋਹਫਾ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਉਪ-ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਗੌਤਮਪੁਰੀ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰੀ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਵਿਕਾਸ ਸਕੂਲ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕੀਤਾ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਬੱਚਿਆਂ, ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ, ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁਭਕਾਮਨਾਵਾਂ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਨਾਂ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਆਉਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਖੁਲ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਇਹ ਪੰਜਵਾਂ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਵਿਕਾਸ ਸਕੂਲ ਹੈ। ਹੁਣ ਤਕ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਕੁਲ 22 ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਵਿਕਾਸ ਸਕੂਲ ਖੁਲ੍ਹੇ ਚੁਕੇ ਹਨ। ਕੁਲ 29 ਜੋਨ ਹਨ ਅਤੇ ਉਹ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹਰ ਜੋਨ ਵਿਚ ਘਟ ਤੋਂ ਘਟ ਇਕ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਸਕੂਲ ਹੋਵੇ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਇਹ ਵੀ ਯੋਜਨਾ ਹੈ ਕਿ ਹਰ ਜੋਨ ਵਿਚ ਕੁਝ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਟ੍ਰੀਮ ਵਾਲੇ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਸਕੂਲ ਖੋਹਲੇ ਜਾਣ। ਮਸਲਨ, ਖੇਡਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਰਖਣ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਖੇਡ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਨਿਖਾਰਨ ਦਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਰਟ, ਕਲਚਰ, ਮਿਊਜ਼ਿਕ, ਥਿਏਟਰ, ਐਕਟਿੰਗ ਵਿਚ ਰੁਚੀ ਰਖਣ ਵਾਲੇ ਪ੍ਰਤਿਭਾਸ਼ਾਲੀ ਸਟੂਡੈਂਟਸ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਟ੍ਰੀਮ ਵਾਲੇ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਮੌਕਾ ਦਿਤਾ ਜਾਏ। ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਬੱਚਾ ਸਾਇੰਸ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਤਿਭਾਸ਼ਾਲੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਫੀਲਡ ਵਿਚ ਕੁਝ ਅਲਗ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਲਈ ਸਾਇੰਸ ਸਟ੍ਰੀਮ ਵਾਲੇ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਸਕੂਲ ਹੋਣ।

ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਸਾਡੇ ਖੇਤਰ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਤਿਭਾਵਾਂ ਹਨ ਜੋ ਹੁਣ ਤੁਹਾਡੇ ਹਵਾਲੇ ਹਨ। ਇਨਾਂ ਵਿਚ ਚੰਗੇ ਡਾਕਟਰ, ਇੰਜੀਨੀਅਰ, ਪਤਰਕਾਰ, ਵਿਗਿਆਨਕ ਆਦਿ ਕੱਢਣਾ ਤੁਹਾਡੀ ਜਿਮੇਂਦਾਰੀ ਹੈ।

ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਕਰਾਂਤੀ ਦੀ ਚਰਚਾ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਹੈ। ਉਹ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਦੀ ਇਕ ਕਾਨਫਰੰਸ ਵਿਚ ਭਾਗ ਲੈਣ ਰੂਸ ਗਏ ਸਨ ਜਿਥੇ 70 ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀਆਂ ਦੇ ਵਿਚ ਜਦ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਕੀ-ਕੀ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤਾਂ ਖੂਬ ਤਾੜੀਆਂ ਵੱਜੀਆਂ। ਖੂਬ ਸ਼ਲਾਘਾ ਮਿਲੀ। ਲੇਕਿਨ ਉਹ ਤਾੜੀਆਂ, ਉਹ ਸ਼ਲਾਘਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਲਈ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਬੱਚਿਆਂ, ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ-ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਸਨ।

ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ ਵਿਚ ਇਹ ਭਰੋਸਾ ਆ ਜਾਏ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਚੰਗੇ ਸਕੂਲ ਖੋਹਲ ਰਖੇ ਹਨ, ਸਾਨੂੰ ਬਹੁਤ ਨਾਮੀ-ਗਿਰਾਮੀ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਹੈ। ■

ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ ਸਮਾਰੋਹ

ਸਿੱਖਿਆ ਕਰਾਂਤੀ ਦਾ ਆਧਾਰ ਹੈ ਅਧਿਆਪਕ, ਦਿੱਲੀ ਸ਼ੁਕਰਗੁਜ਼ਾਰ !

ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਆਏ ਬਦਲਾਅ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਹੁਣ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਬਾਹਰ ਵੀ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਇਸ ਦਾ ਪੂਰੇ ਕਰੈਡਿਟ ਟੀਚਰਾਂ ਨੂੰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਤਿਆਗਰਾਜ ਸਪੋਰਟਸ ਕੰਪਲੈਕਸ ਵਿਚ 5 ਸਤੰਬਰ, 'ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ' ਦੇ ਮੌਕੇ ਤੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਐਸੇ ਸਾਰੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨਿਤ ਕੀਤਾ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਬਦਲਾਅ ਵਿਚ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ ਹੈ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਹੋਈ 'ਸਿੱਖਿਆ ਕਰਾਂਤੀ' ਦਾ ਆਧਾਰ ਇਥੋਂ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕ ਹੀ ਹਨ।

ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਮੌਜੂਦ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲਾਂ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਾਲ ਵਿਚ ਇਕ ਵਾਰ ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ ਤੇ ਵੱਡਾ ਆਯੋਜਨ ਇਹ ਦਸਣ ਦੇ ਲਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਆਪਣੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪੂਰੀ ਦਿੱਲੀ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਸ਼ੁਕਰਗੁਜ਼ਾਰ ਹੈ।

ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਠਾ ਰਾਤ-ਦਿਨ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ ਹੀ ਨਹੀਂ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਤਕ ਸਮਾਰ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਉਚਾ ਸਥਾਨ ਅਧਿਆਪਕ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ ਲੇਕਿਨ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ, ਮੈਕਾਲੇ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਲਾਗੂ ਕੀਤੀ ਜਿਸ ਦੇ

ਬਾਅਦ ਤੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਗੜਦੀ ਗਈ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਹੋ ਰਹੀ ਸਿੱਖਿਆ ਕਰਾਂਤੀ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਦੁਬਾਰਾ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਨੂੰ ਦਰੁਸਤ ਕਰਕੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਮਾਨ ਦਿਵਾਉਣਾ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਮਾਹੌਲ ਬਦਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਕਿਸੇ ਦੇ ਕੋਲ ਥੋੜਾ ਜਿਹਾ ਵੀ ਪੈਸਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲ ਭੇਜਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਲੇਕਿਨ ਹੁਣ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲ ਚੋਂ ਕੱਢ ਕੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਭਰਤੀ ਕਰਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਸ਼ਾਇਦ ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਇਹ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਇਹ ਸੋਚਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ ਸੀ ਕਿ ਐਸਾ ਵੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਨਾ ਹੀ ਇਹ ਕਹਿ ਰਹੇ ਹਨ ਕਿ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ ਕੱਢ ਕੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਭਰਤੀ ਕਰਾਉਣ। ਲੇਕਿਨ ਜੇਕਰ ਕੁਝ ਲੋਕ ਵੀ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਬਿਨਾ ਕਿਸੇ ਮਜਬੂਰੀ ਦੇ ਭਰਤੀ ਕਰਾ ਰਹੇ ਹਨ ਤਾਂ ਇਹ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਹੋਏ ਸੁਧਾਰ ਵਲ ਇਸ਼ਾਰਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪਿਛਲੇ ਤਿੰਨ ਸਾਲ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਜੋ ਕਰਾਂਤੀ ਹੋਈ ਹੈ, ਉਸ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਰਿਜਲਟ ਚੰਗੇ ਆ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਸ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਯੋਗਦਾਨ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦਾ ਹੈ। ਅਧਿਆਪਕ ਪਹਿਲਾਂ ਵੀ ਉਹੀ ਸਨ, ਉਹੀ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਨ, ਲੇਕਿਨ ਮਾਹੌਲ ਬਦਲਿਆ ਤਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਕਰਕੇ ਦਿਖਾਈ। ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਐਸਾ ਮਾਹੌਲ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਲਗਾ ਕਿ ਬਦਲਾਅ ਹੋ ਤਾਂ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪੂਰੇ ਸਮਾਜ ਨੇ ਇਸ ਬਦਲਾਅ ਵਿਚ ਭਾਗੀਦਾਰੀ ਕੀਤੀ। 'ਰੀਡਿੰਗ ਮੇਲਾ' ਲਗਾ ਤਾਂ ਆਮ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਨੇ, ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ ਨੇ ਰੁਚੀ ਲੈ ਕੇ ਭਾਗੀਦਾਰੀ ਕੀਤੀ। ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ ਦਾ ਪੂਰਾ ਸਿਹਰਾ ਪੂਰੀ ਦਿੱਲੀ ਨੂੰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਹੁਣ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਨੂੰ ਅਗਲੇ ਪੜਾਅ ਤਕ ਲੈ ਜਾਣਾ ਹੈ। ਅਜੇ ਤਕ ਇੰਫ੍ਰਾਸਟਕਚਰ ਸੁਧਾਰਨਾ, ਸਫਾਈ ਵਿਵਸਥਾ ਠੀਕ ਕਰਨਾ, ਪਾਣੀ ਦੀ ਵਿਵਸਥਾ ਠੀਕ ਕਰਨਾ, ਸ਼ੌਚਾਲਯ ਠੀਕ ਕਰਨਾ, ਕਮਰੇ ਬਨਾਉਣਾ, ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਨਾ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਟਰੇਨਿਗ ਕਰਾਉਣ ਜਿਹੇ ਕੰਮ ਨੂੰ ਪਹਿਲ ਸੀ, ਲੇਕਿਨ ਹੁਣ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਅਗਲੇ ਉਦੇਸ਼ ਤੇ ਜੋਰ ਦੇਣਾ ਹੈ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਵੱਡਾ ਹੋ ਕੇ ਚੰਗਾ ਨਾਗਰਿਕ ਬਣ ਸਕੇ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਐਸੇ ਬੱਚੇ ਤਿਆਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਰਗ-ਰਗ ਵਿਚ, ਖੂਨ ਦੇ ਹਰ ਕਤਰੇ ਵਿਚ ਦੇਸ਼ ਭਗਤੀ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਭਰੀ ਹੋਵੇ। ਜੋ ਵੱਡੇ ਹੋ ਕੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਲਈ ਮਰ ਮਿਟਣ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਹੋਣ। ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮੌਜੂਦਾ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਰਟਾ-ਰਟਾ ਕੇ ਨੰਬਰ ਲਿਆਉਣ ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਹੈ। ਜਦ ਕਿ ਜਰੂਰਤ ਐਸੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਦੀ ਹੈ ਕਿ ਵੱਡੇ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਬੱਚੇ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰ ਨਾ ਰਹਿਣ। ਜੇ ਕਰ ਕਿਸੇ ਨੇ ਗਰੈਜੂਏਸ਼ਨ ਕਰ ਲਈ, ਪੋਸਟ ਗਰੈਜੂਏਸ਼ਨ ਕਰ ਲਈ, ਪੀਐਚਡੀ ਕਰ ਲਈ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਵੀ ਉਹ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰ ਹੈ ਇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕੁਝ ਸਮੱਸਿਆ ਹੈ। ਇੰਨੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੇ ਬਾਅਦ ਵੀ ਕੋਈ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰ ਕਿਵੇਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ? ਅਜੇ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਦਾ ਮਤਲਬ ਬਸ ਡਿਗਰੀ ਹੀ ਡਿਗਰੀ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ ਅਧਿਆਪਕ ਦਿਵਸ ਦੇ ਮੌਕੇ ਤੇ ਸਾਰੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਉਹ ਅਗਲੇ ਪੜਾਅ ਵਿਚ ਜਾਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨ। ਜੇਕਰ ਐਸੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਤਿਆਰ ਕਰ ਲਈ ਗਈ ਜੋ ਚੰਗਾ ਕਰੈਕਟਰ ਦੇਵੇ, ਜੋ ਇਕ ਦੇਸ਼ ਭਗਤ ਪੈਦਾ ਕਰੇ ਅਤੇ ਜੋ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਰੋਜੀ ਰੋਟੀ ਕਮਾਉਣ ਦੇ ਲਾਇਕ ਬਣਾ ਦੇਵੇ ਤਾਂ ਇਹ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਮਿਸਾਲ ਹੋਵੇਗੀ। ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀਆਂ ਨੂੰ ਕਲਰਕ ਬਣਨ ਦੇ ਲਈ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਸਾਨੂੰ ਇੰਡੀਪੈਂਡਟ ਇਨਸਾਨ ਬਨਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਸੀ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅੱਜ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਦੇ ਸਿਸਟਮ ਵਿਚ ਇਕ ਆਤਮ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਟੀਚੇ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਦੂਜੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਾ ਰਹੇ ਭਾਰਤੀ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਬੁਲਾ ਕੇ ਸੰਮੇਲਨ ਕਰਾਂਗੇ। ਸੈਮੀਨਾਰ ਕਰਾਵਾਂਗੇ ਜਿਸ ਵਿਚ ਵਿਚਾਰਾਂ ਤੇ ਚਰਚਾ ਹੋਵੇਗੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਸਿੱਖਾਂਗੇ ਕਿ ਬਾਕੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕਿਸ ਕਿਸਮ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਹੈ ਤਾਂ ਕਿ ਸਾਡੇ ਸਕੂਲ ਨੈਸ਼ਨਲ ਨਹੀਂ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਸਟੈਂਡਰਡ ਦੇ ਬਣਨ, ਸਾਡੀਆਂ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀਆਂ ਟਾਪ 10 ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਵਿਚ ਹੋਣ। ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਨੂੰ ਇਕ ਨੋਲਜ ਸੈਂਟਰ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਜਾਣਿਆ ਜਾਏ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕ ਇਸ ਲਕਸ਼ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਭਵਿੱਖ ਬਣਾ ਰਹੇ ਹਨ ਜਿਸ ਦੇ ਲਈ ਪੂਰਾ ਸਮਾਜ ਸ਼ੁਕਰਗੁਜ਼ਾਰ ਹੈ।

ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਬਣਾ ਦਿਤਾ ਇਤਿਹਾਸ

ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਲਾਗੂ ਹੋਈ ਡੋਰ ਸਟੇਪ ਡਿਲਿਵਰੀ ਸਕੀਮ

ਦਿੱਲੀ ਵਾਲੇ ਘਰ ਬੈਠੇ ਪਾਉਣ ਲਗੇ ਸਤ ਵਿਭਾਗਾਂ ਦੀਆਂ 40 ਸੇਵਾਵਾਂ

ਨਾਗਰਿਕ ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਨ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ 10 ਸਤੰਬਰ 2018 ਦਾ ਦਿਨ ਇਕ ਸੁਨਹਿਰੇ ਮੋੜ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਦਰਜ਼ ਹੋ ਗਿਆ। ਇਸ ਦਿਨ ਦਿੱਲੀ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਆਪਣ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਅਨੋਖੀ 'ਡੋਰ ਸਟੇਪ ਡਿਲਵਰੀ ਯੋਜਨਾ' ਦਾ ਸ਼ੁਭਆਰੰਭ ਹੋਇਆ। ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਇਸ ਡ੍ਰੀਮ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਤੇ ਕਾਫੀ ਦਿਨਾਂ ਤੋਂ ਕੰਮ ਚਲ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਯੋਜਨਾ ਦੀ ਸਫਲਤਾ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਜਤਾਈਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਆਸ਼ੰਕਾਵਾਂ ਨੂੰ ਨਿਰਾਧਾਰ ਸਾਬਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਜਮੀਨ ਤੇ ਉਤਾਰ ਹੀ ਦਿਤਾ।

ਦਿੱਲੀ ਸਕਤਰੇਤ ਵਿਚ, ਆਪਣੇ ਕੈਬਿਨੇਟ ਮੰਤਰੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਦਾ ਸ਼ੁਭਆਰੰਭ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ, 'ਇਹ ਯੋਜਨਾ ਇਕ ਅਜੂਬਾ, ਇਕ ਅਕਸਪੇਰਿਮੇਂਟ ਹੈ ਅਤੇ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਗਵਰਨਸ ਦਾ ਇਕ ਨਵਾਂ ਮਾਡਲ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਇਹ ਅਸਾਨੀ ਨਾਲ ਲਾਗੂ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ, ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਅਸੀਂ ਬਹੁਤ ਸੰਘਰਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ।'

ਸਰਕਾਰੀ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟਾਂ ਨੂੰ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਘਰ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਵਾਲੀ ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪੜਾਅ ਵਿਚ ਸੱਤ ਵਿਭਾਗਾਂ ਦੀਆਂ 40 ਸੇ

ਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਸੇਵਾ ਸਵੇਰੇ 8 ਤੋਂ ਰਾਤ 10 ਵਜੇ ਤਕ ਸੱਤੇ ਦਿਨ ਉਪਲਬਧ ਹੋਵੇਗੀ। ਸਾਰੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਕਾਲ ਸੈਂਟਰ ਨੰਬਰ 1076 ਜਾਰੀ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਪਹਿਲੇ ਦਿਨ ਤੋਂ ਹੀ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਦਿੱਲੀ ਵਾਲੇ ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਨਾਲ ਜੁੜ ਗਏ। ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਦੇ ਤਹਿਤ ਕਿਸੇ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਫੋਨ ਕੰਮ ਨਾਲ ਸਬੰਧਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਅਤੇ ਘਰ ਤੇ ਮਿਲਣ ਦਾ ਸਮਾਂ ਦਸਣਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮੋਬਾਈਲ ਸਹਾਇਕ ਉਸ ਦੇ ਘਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਘਰ ਤੇ ਹੀ ਕੰਮ ਨਾਲ ਸਬੰਧਤ ਕਾਗਜਾਤ ਸਕੈਨ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਸਬੰਧਿਤ ਸੇਵਾ ਦੀ ਫੀਸ ਦੇ ਨਾਲ 50 ਰੁਪੈ ਵਾਧੂ ਸ਼ੁਲਕ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਡਾਕ ਨਾਲ ਉਪਭੋਗਤਾ ਦੇ ਘਰ ਭੇਜ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਯੋਜਨਾ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਲਦ ਹੀ ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਦਾ ਦਾਇਰਾ 100 ਸੇਵਾਵਾਂ ਤਕ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ।

ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨਾਲ ਸਬੰਧਤ ਸਾਰੀਆਂ ਨਾਗਰਿਕ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਘਰ ਬੈਠੇ ਉਪਲਬਧ ਕਰਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਰਾਸ਼ਨ ਦੀ ਡੋਰ ਸਟੇਪ ਡਿਲੀਵਰੀ ਤੇ ਵੀ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਨਵੀਂ ਸੇਵਾ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਨਵੇਂ ਯੁਗ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਸੇਵਾ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਦਾ ਸਿਧਾ ਪ੍ਰਸਾਰਨ ਦਿੱਲੀ ਦੇ 58 ਕੇਂਦਰਾਂ ਤੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕੇਂਦਰਾਂ ਤੇ ਆਏ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਸਿੱਧੀ ਗਲਬਾਤ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਯੋਜਨਾ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਕਰਾਇਆ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਆਮ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰੀ ਵਿਭਾਗਾਂ ਵਿਚ ਚੱਕਰ ਕੱਟਣ ਦੀ ਹੁਣ ਜਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਪਏਗੀ। ਸਰਕਾਰੀ ਵਿਭਾਗਾਂ ਤੋਂ ਲਾਈਨਾਂ ਖਤਮ ਹੋਣਗੀਆਂ।

ਫਿਲਹਾਲ ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਦੇ ਤਹਿਤ ਵਿਆਹ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ, ਵਿਧਵਾ ਪੈਂਸ਼ਨ, ਗਰੀਬ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਦੀ ਬੇਟੀ ਦੇ ਵਿਆਹ ਦਾ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ, ਨਿਰਮਾਣ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਵਿਚ ਲਗੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਦਾ ਕਾਂਟਰੈਕਟ ਨਵੀਨੀਕਰਨ, ਪਾਣੀ ਦੇ ਕੁਨੈਕਸ਼ਨ, ਸੀਵਰ ਕੁਨੈਕਸ਼ਨ, ਕਨੈਕਸ਼ਨ ਰੀਓਪਨ, ਕਨੈਕਸ਼ਨ ਕੱਟਣਾ, ਗਰੀਬ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਦਾ ਬੀਮਾ ਕਾਰਡ, ਓਲਡ ਏਜ ਪੇਸ਼ਨ, ਵਿਕਲਾਂਗ ਪੈਂਸ਼ਨ, ਦਿੱਲੀ ਫੈਮਿਲੀ ਬੈਨੀਫਿਟ ਸਕੀਮ, ਵਾਹਨ ਆਰਸੀ, ਆਰਸੀ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ, ਮਾਲਿਕਾਨਾ ਹਕ ਬਦਲਾਅ ਆਦਿ, ਓਬੀਸੀ, ਐਸਸੀ, ਐਸਟੀ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਡੋਮਿਸਾਈਲ, ਆਮਦਨ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ, ਜਨਮ ਮੌਤ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ, ਜਮੀਨ ਰਿਕਾਰਡ ਜਿਹੀਆਂ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਸ਼ਾਮਲ ਹਨ।

ਡੋਰ ਸਟੇਪ ਡਿਲੀਵਰੀ ਆਫ ਸਰਵਿਸਿਜ ਨੂੰ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਦਿੱਤੇ ਸਖਤ ਨਿਰਦੇਸ਼

- ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ 'ਡੋਰ ਸਟੇਪ ਡਿਲੀਵਰੀ ਆਫ ਸਰਵਿਸਿਜ' ਯੋਜਨਾ ਨੂੰ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਦਿੱਲੀ ਕੈਬਿਨੇਟ ਦੇ ਸਾਰੇ ਮੰਤਰੀਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਸਖਤ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਜਾਰੀ ਕੀਤਾ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਖੁਦ ਡੋਰ ਸਟੇਪ ਡਿਲੀਵਰੀ ਆਫ ਸਰਵਿਸਿਜ ਯੋਜਨਾ ਦ ਨਿਗਰਾਨੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

- ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਮੋਬਾਈਲ ਸਹਾਇਕ ਦੇ ਵਲੋਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਿਭਾਗ ਵਿਚ ਆਇਆ ਕੋਈ ਵੀ ਮਾਮਲਾ ਸਬੰਧਿਤ ਮੰਤਰੀ ਦੀ ਮੰਜ਼ੂਰੀ ਦੇ ਬਿਨਾ ਰੱਦ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕੇਗਾ।

- ਐਸੇ ਦੋਸ਼ ਲਗ ਰਹੇ ਹਨ ਕਿ ਕਈ ਮਾਮਲਿਆਂ ਵਿਚ ਹੇਠਲੇ ਪੱਧਰ ਤੇ ਰਿਸ਼ਵਤ ਦੇ ਲਈ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਨੂੰ ਰਿਜੈਕਟ ਕਰ ਦਿਤ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਫਿਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਦੇਰੀ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜਦ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ 'ਡੋਰ ਸਟੇਪ ਡਿਲੀਵਰੀ ਆਫ ਸਰਵਿਸਿਜ' ਯੋਜਨਾ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਨੂੰ ਨਾ ਕੇਵਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਘਰ ਤੇ ਬੇਹਦ ਸਹੂਲੀਅਤ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰੀ ਸੇਵਾਵਾਂ ਮੁਹੱਈਆ ਕਰਾਉਣਾ ਹੈ, ਬਲਕਿ ਇਸ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਵਿਭਿੰਨ ਸਰਕਾਰੀ ਵਿਭਾਗਾਂ ਵਿਚ ਵਿਭਿੰਨ ਪੱਧਰ ਤੇ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਦਾ ਖਾਤਮਾ ਕਰਨਾ ਵ ਹੈ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਦੇ ਵਲੋਂ ਜਾਰੀ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ, ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਮਾਮਲੇ ਨੂੰ ਰਿਜੈਕਟ ਕਰਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਸਬੰਧਿਤ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਮੰਤਰੀ ਤੋਂ ਮੰਜ਼ੂਰੀ ਲੈਣੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਾਮਲਿਆਂ ਤੇ 24 ਘੰਟੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਫੈਸਲਾ ਲੈਣਾ ਹੋਵੇਗਾ।

- ਇਸ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਇਹ ਵੀ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਕਿ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦੀ ਡਿਲੀਵਰੀ ਦੇ ਲਈ ਤੈਅ ਸਮੇਂ ਸੀਮਾ ਦਾ ਹਰ ਹਾਲ ਵਿਚ ਪਾਲਨ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਸਮੇਂ ਸੀਮਾ ਸਬੰਧੀ ਕੋਈ ਵੀ ਉਲੰਘਣ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਨਹੀਂ ਕੀਤ ਜਾਵੇਗਾ। ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਕੁਝ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਅਧਿਕਾਰੀ ਅਤੇ ਕਰਮਚਾਰੀ ਕੁਝ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਨੂੰ ਜਾਣ ਬੁਝ ਕੇ ਲਟਕਾਉਂਦੇ ਹਨ ਜਿਸ ਨਾਲ ਕੰਮ ਵਿਚ ਦੇਰੀ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਦਰਖਾਸਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਲੋਕ ਰਿਸ਼ਵਤ ਦੇਣ ਤੇ ਮਜ਼ਬੂਰ ਹੋ ਜਾਣ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਦੇ ਮਾਮਲਿਆਂ ਵਿਚ ਬਿਲਕੁਲ ਕੋਤਾਹੀ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਨਹੀਂ ਕਰ ਰਹੀਹੈ ਅਤੇ ਨਵੀਂ ਯੋਜਨਾ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਨੂੰ ਜੜ ਤੋ ਖਤਮ ਕਰਨ ਵਿਚ ਮਾਸਟਰਸਟ੍ਰੋਕ ਸਾਬਤ ਹੋਵੇਗੀ।

- ਜੇਕਰ ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਦਰਖਾਸਤ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਦੇਰੀ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਮੰਨਿਆ ਜਾਵੇਗਾ ਕਿ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਤੌਰ-ਤਰੀਕਿਆ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਇਕ ਜਨਹਿਤਕਾਰੀ ਯੋਜਨਾ ਨੂੰ ਨਾਕਾਮ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼।

- ਸਾਰੇ ਵਿਭਾਗ ਪ੍ਰਮੁੱਖਾਂ/ਸਕਤਰਾਂ ਨੂੰ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਕਿ ਉਹ ਖੁਦ ਨਿਗਰਾਨੀ ਕਰਨ ਅਤੇ ਸਰਵਿਸਿਜ ਦੀ ਡਿਲੀਵਰੀ ਦੇ ਲਈ ਤੈਅ ਸਮੇਂ ਸੀਮਾ ਦਾ ਪਾਲਨ ਸਖਤੀ ਨਾਲ ਯਕੀਨੀ ਕਰਨ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਮੇਂ ਸੀਮਾ ਦੇ ਉਲੰਘਣ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਗੰਭੀਰਤਾ ਨਾਲ ਲਿਆ ਜਾਵੇਗਾ ਅਤੇ ਦੋਸ਼ੀ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਅਨੁਸ਼ਾਸਨਤਮਕ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਐਸੇ ਮਾਮਲਿਆਂ ਵਿਚ ਵਿਭਾਗ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸਕਤਰ ਵੀ ਜ਼ਿੰਮੇਂਦਾਰ ਹੋਣਗੇ।

- ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਇਹ ਵੀ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਦੇਰੀ ਵਾਲੇ ਸਾਰੇ ਮਾਮਲਿਆਂ ਦੀ ਰੀਪੋਰਟ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਦਿਤੀ ਜਾਏ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਖੁਦ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਕਾਲਸ, ਬੈਕ-ਐਂਡ ਸਿਸਟਮ ਅਤੇ ਆਊਟਪੁਟ ਦੀ ਨਿਗਰਾਨੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ■

ਏਸ਼ੀਅਨ ਖੇਡਾਂ ਵਿਚ ਤਮਗਾ ਜਿੱਤਣ ਵਾਲੇ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਦਾ ਸਨਮਾਨ

ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਬਣੇ ਏਸ਼ੀਅਨ ਖੇਡਾਂ ਦੇ ਤਮਗਾ ਜੇਤੂ

ASIAN GAMES 2018 Jakarta Palembang

ਏਸ਼ੀਅਨ ਖੇਡਾਂ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਨਾਮ ਰੋਸ਼ਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਦਾ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸਕਤਰੇਤ ਵਿਚ ਆਯੋਜਿਤ ਇਕ ਸਮਾਰੋਹ ਵਿਚ ਸਨਮਾਨ ਕੀਤਾ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ਵਾਸੀਆਂ ਦੇ ਵਲੋਂ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਨੇ ਜਿਸ ਕਠਿਨ ਹਲਾਤਾਂ ਅਤੇ ਘਟ ਸੰਸਾਧਨਾਂ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਪਰਿਵਾਰ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਾਮ ਰੋਸ਼ਨ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਉਸ ਦੀ ਜਿੰਨੀ ਸ਼ਲਾਘਾ ਕੀਤੀ ਜਾਏ, ਘਟ ਹੈ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਜੋ ਵੀ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਜਰੂਰ ਕਰੇਗੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਪਾਲਿਸੀ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ ਕੀਤਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਤਮਗਾ ਜਿਤਣ ਵਾਲੇ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਹੁਣ ਇਨਾਮ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਜ਼ਿਆਦਾ ਰਕਮ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਏਸ਼ੀਅਨ ਖੇਡਾਂ ਵਿਚ ਸੋਨੇ ਦਾ ਤਮਕਾ ਜਿਤਣ ਵਾਲੇ ਖਿਡਾਰੀ ਨੂੰ ਪਹਿਲਾਂ 20 ਲਖ ਰੁਪੈ ਇਨਾਮ ਰਾਸ਼ੀ ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਜਿਸ ਨੂੰ ਵਧਾ ਕੇ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਏਸ਼ੀਅਨ ਖੇਡਾਂ ਵਿਚ ਪਹਿਲਾਂ ਚਾਂਦੀ ਦਾ ਤਮਗਾ ਜਿਤਣ ਵਾਲੇ ਖਿਡਾਰੀ ਨੂੰ 14 ਲਖ ਰੁਪੈ ਮਿਲਦੇ ਸਨ ਜਿਸ ਨੂੰ ਵਧਾ ਕੇ 75 ਲਖ ਰੁਪੈ ਕਰ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਕਾਂਸੀ ਤਮਗਾ ਵਿਜੇਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪਹਿਲਾਂ 10 ਲਖ ਰੁਪੈ ਦੀ ਇਨਾਮੀ ਰਾਸ਼ੀ ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਜੋ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਾਫੀ ਮਦਦ ਮਿਲੇਗੀ। ਸਿਰਫ ਪੈਸੇ ਨਾਲ ਨਹੀਂ,

ਹੋਰ ਵੀ ਜੋ ਜਰੂਰਤ ਹੋਵੇਗੀ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਦੀ, ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਉਸ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰੇਗੀ। ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਦੇ ਕੋਚਾਂ ਨੂੰ 3 ਲਖ ਰੁਪੈ ਦੀ ਇਨਾਮੀ ਰਾਸ਼ੀ ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਜਿਸ ਨੂੰ ਹੁਣ ਵਧਾ ਕੇ 6 ਲਖ ਰੁਪੈ ਕਰ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਖਿਡਾਰੀ ਦੂਜੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦਾ ਸਰੋਤ ਹਨ। ਏਸ਼ੀਅਨ ਖੇਡਾਂ ਵਿਚ ਤਮਗਾ ਜਿਤਣਾ ਅਸੰਭਵ ਜਿਹਾ ਲਗਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਖਿਡਾਰੀ ਐਸੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦੇ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਇਛਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਖਿਡਾਰੀ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਜਾਣ ਤਾਂ ਕਿ ਬੱਚੇ ਇਨਾਂ ਨਾਲ ਮਿਲ ਕੇ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਹੋ ਸਕਣ।

ਏਸ਼ੀਅਨ ਗੇਮਸ, 2018 ਵਿਚ ਤਮਗਾ ਜਿਤਣ ਵਾਲੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੋਚਾਂ ਨੂੰ ਸੰਬੋਧਿਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਹੁਣ ਵਧਾ ਕੇ 50 ਲਖ ਰੁਪੈ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਨਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਾਮ ਰੋਸ਼ਨ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਖੇਡ ਪ੍ਰਤਿਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਇਨਾਮੀ ਰਾਸ਼ੀ ਨਾਲ ਸਨਮਾਨਤ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਵੱਡਾ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਆਯੋਜਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾਏਗਾ। ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਭਾਵੀ ਖੇਡ ਪ੍ਰਤਿਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੋਤਸਾਹਿਤ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਯੋਜਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਦਸਦੇ ਹੋਏ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਲਦੀ ਹੀ ਇਸ ਸੰਧਰਭ ਵਿਚ ਦੋ ਨੀਤੀਆਂ ਲਾਗੂ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਇਸ ਦੇ ਜਰੀਏ ਐਸੇ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਮੁਹੱਈਆ ਕਰਾਈਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਜਾਂ ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਪੱਧਰ ਤੇ ਇਕ ਵਾਰ ਵੀ ਕੋਈ ਤਮਗਾ ਜਿਤਿਆ ਹੈ। ਐਸੇ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਆਰਥਿਕ ਮਦਦ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਇਕ ਕਮੇਟੀ ਬਣਾਏਗੀ ਜਿਸ ਵਿਚ ਖੇਡ ਜਗਤ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਹਸਤੀਆਂ ਅਤੇ ਅਧਿਕਾਰੀ ਹੋਣਗੇ। ਕਿਸੇ ਖਿਡਾਰੀ ਨੂੰ ਕੀ-ਕੀ ਸੁਵਿਧਾ ਦਿਤੀ ਜਾਏ ਅਤੇ ਕਿੰਨੀ ਆਰਥਿਕ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿਤੀ ਜਾਏ, ਇਸ ਦੀ ਕੋਈ ਲਿਮਟ ਨਹੀਂ ਰਖੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਇਹ ਕਮੇਟੀ ਤੈਅ ਕਰੇਗੀ। ■

ਸ਼ਹੀਦ ਨਰੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਮਿਲੇਗੀ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪਏ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ

ਡਿਊਟੀ ਤੇ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਸੈਨਿਕਾਂ ਦੇ ਸਨਮਾਨ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਬੇਹਦ ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲ ਹੈ। ਹਾਲ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪਏ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਦੇਣ ਵਾਲੀ ਯੋਜਨਾ ਵਿਚ ਮਹਤਵਪੂਰਨ ਸੰਸ਼ੋਧਿਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਯੋਜਨਾ ਵਿਚ ਉਹ ਜਵਾਨ ਵੀ ਆਉਣਗੇ, ਜਿਨਾਂ ਦਾ ਪਰਿਵਾਰ ਪਿਛਲੇ 5 ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਰਹਿ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਇਹ ਜਰੂਰੀ ਨਹੀਂ ਕਿ ਉਹ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਪੈਦਾ ਹੋਇਆ ਹੋਵੇ।

ਦਿੱਲੀ ਕੈਬਿਨੇਟ ਦੇ ਇਸ ਅਹਿਮ ਫੈਸਲੇ ਦੇ ਬਾਅਦ ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਸੈਨਿਕਾਂ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਬੇਰਹਿਮੀ ਨਾਲ ਮਾਰੇ ਗਏ, ਸ਼ਹੀਦ ਨਰੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਵੀ ਇਕ ਕਰੋੜ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਮਿਲ ਸਕੇਗੀ। ਨਾਲ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਘਰ ਦੇ ਇਕ ਮੈਂਬਰ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰੀ ਨੌਕਰੀ ਵੀ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਸੈਨਾ ਦੇ ਜਵਾਨਾਂ, ਡਿਊਟੀ ਤੇ ਮਰ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਦਿੱਲੀ ਪੁਲੀਸ ਅਤੇ ਫਾਇਰ ਸਰਵਿਸ ਦੇ ਕਰਮੀਆਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਨੂੰ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਵਲੋਂ ਇਕ ਕਰੋੜ ਰੁਪੈ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।

ਰਾਜਸਵ ਮੰਤਰੀ ਕੈਲਾਸ਼ ਗਹਲੋਤ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਅਜੇ ਤਕ ਐਸੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਥਾਈ ਅਵਾਸ ਦਿੱਲੀ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋਣ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਉਸ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਰਹਿ ਰਹੇ ਹੋਣ। ਲੇਕਿਨ ਹੁਣ ਉਹ ਪਰਿਵਾਰ ਵੀ ਇਸ ਦੇ ਦਾਇਰੇ ਵਿਚ ਆਉਣਗੇ, ਜੋ ਪਿਛਲੇ ਪੰਜ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਨਿਵਾਸ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋਣ। ਸ਼ਹੀਦ ਨਰੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਦਾ ਸਥਾਈ ਪਤਾ ਹਰਿਆਣਾ ਦਾ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਉਨਾਂ ਦਾ ਪਰਿਵਾਰ ਪਿਛਲੇ 10-15 ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਰਹਿ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਨਰੇਂਦਰ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਇਕ ਕਰੋੜ ਦੀ ਸਨਮਾਨ ਰਾਸ਼ੀ ਦਿਤੀ ਜਾ ਸਕੇਗੀ। ਕੈਲਾਸ਼ ਗਹਲੋਤ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਗਰੁਪ ਆਫ ਮਿਨਿਸਟਰਸ ਦੇ ਕੋਲ ਐਸੇ ਕਰੀਬ 20-21 ਕੇਸ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਅਤੇ ਇਨਾਂ ਤੇ ਜਲਦ ਫੈਸਲਾ ਲਿਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹਰਿਆਣਾ ਦੇ ਸੋਨੀਪਤ ਜ਼ਿਲੇ ਦੇ ਥਾਣਾ ਕਲਾਂ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਸ਼ਹੀਦ ਨਰੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨਾਲ ਮੁਲਾਕਾਤ ਕੀਤੀ ਸੀ ਅਤੇ ਸ਼ਹੀਦ ਨਰੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਦੇ ਸਨਮਾਨ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਕਾਨੂੰਨ ਬਲਣ ਦੀ ਗਲ ਕੀਤੀ ਸੀ। ■

شہید نریندر سنگھ کے خاندان کو ملے گی ایک کروڑ روپے کی اعزازی رقم

ڈیوٹی پر شہید ہونے والے فوجیوں کے احترام کو لے کر دہلی سرکار بیحد احساس مُروّت ہے۔ حال میں سرکار نے شہیدوں کے فیملی کو ایک کروڑ روپے اعزازی رقم دینے والی یوجنا میں اہم بدلاؤ کیئے ہیں۔ اس یوجنا میں وہ جوان بھی آئیں گے، جن کا کنبہ پچھلے پانچ سالوں سے دہلی میں رہ رہا ہے۔ اس کے لئے یہ ضروری نہیں ہے کہ وہ دہلی میں پیدا ہوا ہو۔

دہلی کابینہ کے اس اہم فیصلے کے بعد پاکستانی فوجوں کے ہاتھ بے رحمی سے مارے گئے، شہید نریندر سنگھ کے کنبہ کو بھی ایک کروڑ کی اعزازی رقم مل سکے گی۔ ساتھ ہی ان کے گھر کے ایک ممبر کو سرکاری نوکری بھی دی جائے گی۔ شہید ہونے والے سینا کے جوانوں، ڈیوٹی پر مارے جانے والے دہلی پولیس اور فائر سروس کے ملازمین کے خاندانوں کو دہلی سرکار کی جانب سے ایک کروڑ روپے کی اعزازی رقم دی جائے گی۔

وزیر خزانہ کیلاش گہلوت نے بتایا کہ ابھی تک ایسے شہیدوں کو احترام دیا جاتا تھا، جن کا مستقل رہائش گاہ دہلی ہو یا شہید ہونے کے دوران ان کے کنبہ دہلی میں رہے ہوں۔ لیکن اب وہ خاندان بھی اس کے دائرے میں آئیں گے، جو پچھلے پانچ سالوں سے دہلی میں رہائش پذیر ہوں۔ شہید نریندر سنگھ کا مستقل پتہ ہریانہ کا ہے، لیکن ان کا خاندان 10-15 سالوں سے دہلی میں رہ رہے ہیں۔ اب نریندر سنگھ کے فیملی کو ایک کروڑ کی اعزازی رقم دی جا سکے گی۔ کیلاش گہلوت نے بتایا کہ دہلی سرکار کے گروپ آف منسٹرس کے پاس ایسے قریب 20-21 کیس ہے، جن پر غور کیا جا رہا ہے۔ اور ان پر جلد فیصلہ لیا جائے گا۔

وزیر اعلیٰ اروند کیجری وال نے اس سے پہلے ہریانہ کے سونی پت ضلع کے تھانہ کلاں گاؤں میں شہید نریندر سنگھ کے رشتہ داروں سے ملاقات کی تھی اور شہید نریندر سنگھ کے احترام میں دہلی میں قانون بدلنے کی بات کی تھی۔ ■

دہلی سرکار اُسے پورا کرے گی۔کھلاڑیوں کے کوچ کو 3 لاکھ روپے کی انعامی رقم دی جاتی تھی جسے اب بڑھا کر 6 لاکھ روپے کردیا گیا ہے۔

اروند کیجری وال نے کہا کہ یہ کھلاڑی دوسرے بچوں کیلئے تحریک کا ذریعہ ہے۔ایشین گیمس میں میڈل جیتنا ناممکن سا لگتا ہے۔ یہ کھلاڑی ایسے بچوں کو تحریک دے سکتے ہیں۔انہوں نے کہا کہ ان کی خواہش ہے کی یہ کھلاڑی تمام اسکولوں میں جائیں تاکہ بچے ان سے مل کر راغب ہوسکیں۔

ایشین گیمس، 2018 میں میڈل جیتنے والے دہلی کے کھلاڑیوں اور ان کے کوچوں کو خطاب کرتے ہوئے وزیر اعلیٰ نے کہا کہ دہلی اور ملک کا نام روشن کرنے والے ٹیلنٹڈ کھلاڑیوں کو انعامی رقم سے نوازنے کیلئے ایک بڑا پروگرام کا انعقاد کیا جائے گا۔کھلاڑیوں اور آئندہ کھیل پرتبھاؤں کو حوصلہ افزائی کرنے کے لئے دہلی سرکار کی اسکیموں کو بتاتے ہوئے انہوں نے کہا کہ جلدی ہی اس مقابل میں دو پالیسی لاگو کی جائیں گی۔ اس کے ذریعے ایسے کھلاڑیوں کو سہولتیں مہیا کرائی جائیں گی جنہوں نے قومی یا بین الاقوامی سطح پر ایک بار بھی کوئی میڈل جیتا ہو۔ایسے کھلاڑیوں کو اقتصادی مدد دی جائے گی۔اس کے لئے دہلی سرکار ایک کمیٹی بنائے گی جس میں کھیل جگت سے جُڑی ہستیاں اور حکام ہوں گے۔کسی کھلاڑی کو کیا کیا سہولت دی جائے اور کتنی اقتصادی مدد دی جائے، اس کی کوئی لمٹ نہیں رکھی گئی ہے۔ یہ سب یہ کمیٹی طے کرے گی۔ ■

ایشین گیمس میں میڈل جیتنے والے کھلاڑیوں کا احترام

بچوں کے لئے تحریک بنے ایشین گیمس کے میڈلسٹ

ایشین گیمس میں دہلی کا نام روشن کرنے والے کھلاڑیوں کا دہلی کے وزیر اعلیٰ نے سکریٹریٹ میں منعقدہ ایک تقریب میں عزت افزائی کی۔ انہوں نے دہلی اور عوام کی طرف سے کھلاڑیوں کو مبارکباد دیتے ہوئے کہا کہ کھلاڑیوں نے جس غیر معمولی صورت حال اور کم انتظاموں کے باوجود خاندان اور ملک کا نام روشن کیا ہے، ان کی جتنی تعریف کی جائے، کم ہے۔

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ دہلی سرکار کھلاڑیوں کے لئے جو بھی کرسکتی ہے، ضرور کرے گی۔ ان کی سرکار نے پالیسی میں بدلاؤ کیا ہے جس سے میڈل جیتنے والے کھلاڑیوں کو اب انعام کے طور پر زیادہ رقم دی جائے گی۔ انہوں نے بتایا کہ ایشین گیمس میں گولڈ میڈل جیتنے والے کھلاڑی کو پہلے 20 لاکھ روپے انعامی رقم دی جاتی تھی جسے بڑھا کر دہلی سرکار نے ایک کروڑ روپے کر دیا ہے۔ اسی طرح ایشین گیمس میں پہلے سلور میڈل جیتنے والے کھلاڑی کو 14 لاکھ روپے ملتے تھے جسے بڑھا کر اب 75 لاکھ روپے کر دیا گیا ہے۔ کانسہ میڈلسٹوں کو پہلے 10 لاکھ روپے کی انعامی رقم دی جاتی تھی اب بڑھا کر 50 لاکھ روپے ہوگئی ہے۔ امید ہے کہ اس سے کھلاڑیوں کو کافی مدد ملے گی۔ صرف پیسے سے نہیں، اور بھی جو ضرورت ہوگی کھلاڑیوں کی،

ڈور اسٹیپ ڈلیوری آف سروسیز

کو لاگو کرنے کو لیکر وزیر اعلیٰ نے دیئے سخت ھدایت

- وزیر اعلیٰ اروند کیجری وال نے 'ڈور اسٹیپ ڈلیوری آف سر وسیز' اسکیم کو لا گو کر نے کو لیکر دھلی کا بینہ کے سبھی وزیروں کو ایک سخت ھدا یت جا ری کیا ۔وزیر اعلیٰ خود ڈور اسٹیپ ڈلیوری آف سر وسیز اسکیم کی نگرا نی کر رھے ھیں۔
- وزیر اعلیٰ نے ھدایت دی ھے کہ مو با ئل معا ون کی طرف سے کسی بھی محکمہ میں آیا کو ئی بھی معاملہ متعلقہ وزیر کی منظو ری کے بنا رد نہیں کیا جا سکے گا۔
- ایسے الزام لگ رھے تھے کہ کئی معاملوں میں نچلی سطح پر رشوت کیلئے درخواستوں کو رد کر دیا جا تا ھے یا پھر اُن میں دیری کی جا تی ھے۔ جبکہ سر کار کے مطا بق 'ڈور اسٹیپ ڈلوری آف سر وسیز' اسکیم کا مقصد دھلی کے شھر یوں کو نہ صرف ان کے گھر پر بیحد سھو لیت کے ساتھ سر کا ری خدمات مھیا کرا نا ھے، بلکہ اسکا مقصد مختلف سر کا ری محکموں میں مختلف سطح پر بد عنوانی کا خاتمہ کر نا بھی ھے۔ وزیر اعلیٰ کی طرف سے جا ری ھدا یت کے مطا بق، اگر کسی معاملے کو رد کر نا ھے تو اس کے لئے متعلقہ محکمہ کے وزیر سے منظو ری لینی ھوگی۔ اس طرح کے معاملوں پر 28 گھنٹے کے اندر فیصلہ لینا ھو گا۔
- اس کے علا وہ وزیر اعلیٰ اروند کیجری وال نے یہ بھی ھدا یت دیا کہ خدمات کی ڈلیوری کے لئے مقرر وقت کی حدکا ھر حال میں تعمیل کیا جانا چاھیئے۔وقت مقررہ سے متعلق کو ئی بھی خلاف ورزی برداشت نہیں کی جا ئے گی۔سر کار کا ماننا ھے کہ کچھ بد عنوان آفیسران و ملازمین کچھ درخواستوں کو جان بوجھ کر لٹکا تے ھیں جس سے کام میں دیری ھو اور درخواست کر نے والے لوگ رشوت دینے پر مجبور ھو جائیں۔ دھلی سر کار، بدعنوانی کے معاملے میں با لکل بھی کو تا ھی بر داشت نہیں کر رھی ھے اور نئی اسکیم بدعنوانی کو جڑ سے ختم کر نے میں ماسٹر اسٹروک ثابت ھوگی۔
- اگر اس اسکیم میں کسی درخواست کو لیکر دیری کی جا تی ھے تو وہ ما نا جا ئے گا کہ بد عنوان طور طریقوں کو ختم کر نے والی ایک عوامی دلچسپی یو جنا کو ناکام کر نے کی کو شش ھے۔
- سبھی محکمہ چیف/سکریٹریوں کو ھدا یت دی گئی کہ وہ خود نگرا نی کریں اور سروسیز کی ڈلیوری کیلئے مقررہ وقت حد کا مشاھدہ سختی سے یقینی بنائیں۔وزیر اعلیٰ نے کھا کہ وقت مقررہ کے خلاف ورزی کو بھت سختی سے لیا جائے گا اور مجرم حکام کیخلاف نظم و ضبط کارروائی کی جائے گی۔ایسے معاملوں میں محکمہ چیف سکریٹری بھی ذمہ دار ھوں گے ۔
- وزیر اعلیٰ نے یہ بھی حکم دیا ھے کہ دیری والے سبھی معاملوں کی رپورٹ انھیں روزا نہ دی جا ئے۔ وزیر اعلیٰ خودآنے والی کال، بیک اینڈ سسٹم اور آؤٹ پوٹ کی نگرا نی کر رھے ھیں۔

کیلئے ایک کال سینٹر نمبر 1076 جاری کیا گیا۔ پہلے دن سے ہی ہزاروں دہلی والے اس یوجنا سے جڑ گئے۔ اس اسکیم کے تحت کسی شخص کوفون کر کے کام سے متعلق جانکاری اور گھر پر ملنے کا وقت بتانا ہوتا ہے۔ موبائل مددگار اس کے گھر جاتا ہے۔ گھر پر ہی کام سے متعلق کاغذات اسکین کیا جاتا ہے۔ اس کے لئے متعلقہ خدمات کی فیس کے ساتھ 50 روپے اضافی چارج لیا جاتا ہے۔ پھر سرٹی فکیٹ ڈاک سے صارفین کے گھر بھیج دیا جاتا ہے۔ اسکیم کا افتتاح کرتے ہوئے وزیراعلیٰ کیجری وال نے کہا کہ جلدی ہی اس یوجنا کا دائرہ 100 خدمات

تک کر دیا جائے گا۔ دھیرے دھیرے دہلی سرکار سے متعلقہ سبھی شہری خدمات کو گھر بیٹھے دستیاب کرایا جائے گا۔

وزیراعلیٰ نے کہا کہ دہلی سرکار راشن کی ڈور اسٹیپ ڈلیوری پر بھی کام کر رہی ہے۔ نئی سہولت کے ساتھ ہی ایک نئے دور کی شروعات ہو رہی ہے۔ اس خدمات کی شروعات کا سیدھا نشریہ دہلی کے 58 مراکز پر کیا گیا۔ وزیراعلیٰ نے ان مراکز پر آئے لوگوں سے سیدھی بات کی۔ انہوں نے سرکار کی یوجنا سے واقف کرایا۔ وزیراعلیٰ نے کہا کہ عام شہری کو سرکاری شعبوں میں چکر کاٹنے کی اب ضرورت نہیں پڑے گی۔ سرکاری محکموں سے لائنیں ختم ہوں گی۔

فی الحال اس یوجنا کے تحت نکاح سرٹیفکیٹ، بیوہ پنشن، غریب عورتوں کی بیٹی کی شادی کا سرٹی فکیٹ، تعمیراتی سرگرمیوں میں لگے ملازمین کا دستاویز تجدید کاری، پانی کے کنکشن، سیور کنکشن، کنکشن ری اوپن، کنکشن کاٹنا، غریب خاندانوں کا بیمہ کارڈ، اولڈ ایج پنشن، وکلانگ پنشن، دہلی فیملی بینی فٹ اسکیم، گاڑی آر سی، آر سی میں بدلاؤ، مالکانہ حق بدلاؤ وغیرہ، او بی سی، ایس سی، ایس ٹی سرٹی فکیٹ، ڈومیسائل، آمدنی سرٹی فکیٹ، پیدائشی، موت سرٹیفکیٹ، زمین ریکارڈ جیسی سہولتیں شامل ہیں۔

کیجریوال سرکار نے تاریخ رقم کی

دنیا میں پہلی بار لاگو ہوئی ڈور اسٹیپ ڈلیوری اسکیم

دہلی والے گھر بیٹھے پانے لگے سات محکموں کی 40 خدمات

شہری حکومت کی تاریخ میں 10 ستمبر 2018 کا دن ایک سنہرے موڑ کے طور پر درج ہو گیا۔ اس دن دہلی ہی نہیں دنیا میں اپنی طرح کی انوکھی 'ڈوراسٹیپ ڈلیوری یوجنا' کا آغاز ہوا۔ کیجری وال سرکار کے اس ڈریم پروجیکٹ پر کافی دنوں سے کام چل رہا تھا۔ یوجنا کی کامیابی کو لیکر جتائی جا رہی تمام اندیشوں کو بے بنیاد ثابت کرتے ہوئے وزیر اعلیٰ اروند کیجری وال نے اسے زمین پر اُتار ہی دیا۔

دہلی سکریٹریٹ میں اپنے کابینی وزیروں کے ساتھ اس یوجنا کا آغاز کرتے ہوئے وزیر اعلیٰ نے کہا 'یہ یوجنا ایک عجوبہ' ایک ایکسپیری مینٹ ہے اور پوری دنیا کے اندر گورنیس کا ایک نیا ماڈل ہے، لیکن یہ آسانی سے لاگو نہیں ہوا اس کے لئے ہم نے بہت جدوجہد کیا ہے۔ سرکاری سرٹی فکیٹ کو لوگوں کے گھر پہونچانے والی اس یوجنا کے پہلے مرحلہ میں سات محکموں کی 40 خدمات کو شامل کیا گیا ہے۔ یہ سہولت صبح 8 سے رات 10 بجے تک ساتوں دن دستیاب ہوگی۔ سبھی خدمات

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ وہ پرائیویٹ اسکولوں کے خلاف نہیں ہیں۔ نہ ہی وہ کہہ رہے ہیں کہ سبھی لوگ اپنے بچوں کو پرائیویٹ اسکولوں سے نکال کر سرکاری اسکولوں میں داخلہ کرائیں۔ لیکن اگر کچھ لوگ بھی اپنے بچوں کو پرائیویٹ اسکولوں سے سرکاری اسکولوں میں بنا کسی مجبوری کے داخلہ کرا رہے ہیں تو یہ سرکاری اسکولوں کے اندر ہوئے سدھار کی طرف اشارہ کرتی ہے۔ پچھلے تین سال میں سرکاری اسکولوں میں جو انقلاب آیا ہے، اس کی وجہ سے ریزلٹ اچھے آ رہے ہیں۔ اس میں سب سے بڑی شراکت اساتذہ کا ہے۔ ٹیچر پہلے بھی وہی تھے، وہی پرنسپل تھے، لیکن ماحول بدلا تو انہی لوگوں نے انقلاب لاکر دکھائی۔ سرکار نے ایسا ماحول تیار کیا کہ لوگوں کو لگا کہ بدلاؤ ہو تو سکتا ہے۔ پورے سماج نے اس بدلاؤ میں شراکت کی۔ 'ریڈنگ میلہ' لگا تو عام شہریوں نے، والدین نے دلچسپی لیکر شرکت کی۔ ایجوکیشن میں بدلاؤ کا سہرا پوری دہلی کو جاتا ہے۔

وزیر اعلیٰ کیجری وال نے کہا کہ اب تعلیمی نظام میں بدلاؤ کی کوشش کو الگ سطح پر لے جانا ہے۔ ابھی تک انفرا اسٹکچر سدھارنا، صفائی نظام ٹھیک کرنا، پانی کا نظام ٹھیک کرنا، بیت الخلاء ٹھیک کرنا، کمرے بنوانا، ٹیچروں کو راغب کرنا، ان کی ٹریننگ کرانے جیسے کام کو ترجیح تھی، لیکن اب تعلیم کے اصل مقصد پر زور دینا ہے۔ بچوں کی اچھی تعلیم کا مطلب ہے کہ وہ بڑا ہو کر اچھا شہری بن سکے۔ دہلی سرکار ایسے بچے تیار کرنا چاہتی ہے، جن کی رگ رگ میں خون کے ہر قطرے میں محبّ وطن کا جذبہ بھرا ہو۔ جو بڑے ہو کے ملک کے لئے مر مٹنے کو تیار ہوں۔ جناب کیجری وال نے کہا کہ موجودہ تعلیمی نظام میں رٹا رٹا کر نمبر لانے پر زور ہے۔ جب کی ضرورت ایسی تعلیمی نظام تیار کرنے کی ہے کہ بڑے ہونے کے بعد بچے بے روزگار نہ رہیں۔ اگر کسی نے گریجویشن کر لی، پوسٹ گریجویشن کر لی، پی ایچ ڈی کر لی اور اس کے بعد بھی وہ بے روزگار ہے اس کا مطلب تعلیمی نظام کے اندر کچھ دقتیں ہیں۔ اتنی پڑھائی کے بعد بھی کوئی بے روزگار کیسے ہو سکتا ہے؟ ابھی تعلیمی نظام کا مطلب بس ڈگری ہی ڈگری ہے۔

جناب کیجری وال نے کہا کہ وہ ٹیچر ڈے کے موقع پر سبھی ٹیچروں کا دعوت اسماء چاہتے ہیں کہ وہ اگلے مرحلہ میں جانے کی کوشش کریں۔ اگر ایسی تعلیمی نظام تیار کر لی گئی جو اچھا کریکٹر دے، جو ایک محبّ وطن پیدا کرے اور جو بچوں کو اپنی روزی روٹی کمانے کے لائق بنا دے تو وہ پوری دنیا کے لئے مثال ہوگی۔ انگریزوں نے ہندوستانیوں کو کلرک بننے کے لئے تیار کیا تھا، ہمیں انڈی پینڈ ینٹ انسان بنانے کے لئے تیار نہیں کیا تھا۔

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ آج دہلی کی تعلیمی نظام کے سسٹم میں ایک خود اعتمادی نظر آتی ہے کہ اس ہدف کو حاصل کیا جا سکتا ہے۔ ہم دنیا کے دوسرے ملکوں میں پڑھا رہے بھارتی ٹیچروں کو بلا کر اجتماع کریں گے۔ سیمینار کرائیں گے جس میں مشورہ پر چرچہ ہوگی۔ ان سے سیکھیں گے کہ باقی دنیا کے اندر کس قسم کی تعلیمی نظام ہے تاکہ ہمارے اسکول نیشنل نہیں انٹرنیشنل اسٹینڈرڈ کے بنیں، ہماری یونیورسٹی دنیا کی ٹاپ 10 یونیورسٹیوں میں ہوں۔ دینا میں دہلی کو ایک نالج سینٹر کے طور پر جانا جائے۔

انہوں نے کہا کہ تعلیم اس ہدف کو حاصل کر سکتے ہیں۔ وہ ملک کا مستقبل بنا رہے ہیں جس کے لئے پورا سماج شکر گزار ہے۔ ■

ٹیچر ڈے تقریب

تعلیمی انقلاب کی بنیاد ھے اساتذہ، دھلی شکر گزار!

دھلی کی تعلیمی نظام میں آئے بدلاؤ کا ذکر اب دیش کے باہر بھی ہو رہا ہے۔ دہلی سرکار اس کا پورا سہرا ٹیچروں کو دیتی ہے۔ دہلی کے تیاگ راج اسپورٹس کمپلیکس میں 5 ستمبر، "ٹیچرس ڈے" کے موقع پر وزیر اعلیٰ اروند کیجری وال نے ایسے تمام ٹیچروں کو اعزاز سے نوازا جنھوں نے بدلاؤ میں اہم رول نبھائی ہے۔ وزیر اعلیٰ نے کہا کہ دہلی میں ہوئی 'تعلیمی انقلاب' کی بنیاد یہاں کے ٹیچر ہی ہیں۔

جناب کیجری وال نے تقریب میں موجود ٹیچروں اور پرنسپلوں کو مبارکباد دیتے ہوئے کہا کہ سال میں ایک بار ٹیچرس ڈے پر شاندار منظّم طریقے سے پروگرام یہ بتانے کے لئے ہوتا ہے کہ دہلی اپنے ٹیچروں کی عزت افزائی کرتی ہے۔ ان سے پیار کرتی ہے۔ پوری دہلی ٹیچروں کا شکرگزار ہے جن کی محنت کی وجہ سے سرکاری اسکولوں کی عظمت رات-دن بڑھ رہی ہے۔ انہوں نے کہا کہ قدیم بھارت ہی نہیں، انگریزوں کے آمد سے پہلے تک سماج میں سب سے اونچا مقام ٹیچر کا ہوتا تھا لیکن انگریزوں نے، میکالے کی تعلیمی نظام لاگو کی جس کے بعد سے تعلیمی نظام بگڑتی گئی۔ دہلی میں ہو رہی تعلیمی انقلاب کا مقصد دوبارہ تعلیمی نظام کو درست کر کے اساتذہ کو عزت دلانا ہے۔ جناب کیجری وال نے کہا کہ دہلی میں ماحول بدل رہا ہے۔ پہلے کسی کے پاس تھوڑا سا بھی پیسہ ہوتا تھا تو وہ اپنے بچوں کو پرائیویٹ اسکول بھیجنا چاہتا تھا۔ لیکن اب دہلی میں لوگ اپنے بچے کو پرائیویٹ اسکول سے نکال کر سرکاری اسکولوں میں داخلہ کرا رہے ہیں۔ شاید بھارت کی تاریخ میں یہ پہلی بار ہو رہا ہے۔ پہلے یہ سوچا بھی نہیں جا سکتا تھا کہ ایسا ہو بھی سکتا ہے۔

شمال مشرقی ضلعے کو ملا پرتبھا وکاس ودیا لیہ کا تحفہ

ہر زون میں کھُلے گا پرتبھا وکاس ودیا لیہ

دہلی سرکار نے شمال مشرقی ضلعے کو ایک راجکیہ پرتبھا وکاس ودیالیہ کا تحفہ دیا ہے۔ دہلی کے نائب وزیراعلیٰ اور وزیر تعلیم منیش سسودیا نے گوتم پوری میں راجکیہ پرتبھا وکاس ودیالیہ کا افتتاح کیا۔

جناب سسودیا نے بچوں، سرپرستوں، اساتذہ اور محکمہ تعلیم کے حکام کو خطاب کرتے ہوئے کہا کہ ان کی سرکار آنے کے بعد دہلی میں کھُلنے والے یہ پانچواں پرتبھا وکاس ودیالیہ ہے۔ اب تک دہلی میں کُل 22 پرتبھا وکاس ودیالیہ کھُل چکے ہیں۔ کُل 29 زون ہیں اور وہ چاہتے ہیں کہ ہر زون میں کم سے کم ایک پرتبھا ودیالیہ ہو۔

جناب منیش سسودیا نے کہا کہ سرکار کا یہ بھی منصوبہ ہے کہ ہر زون میں کچھ خاص اسٹریم والے پرتبھا ودیالیہ کھولے جائیں۔ مثلاً، کھیلوں میں پرتبھا رکھنے والے بچوں کو کھیل پرتبھا ودیالیہ میں اپنے آپ کو نکھارنے کا موقع ملے۔ اسی طرح، کلچر، میوزک، تھیٹر، ایکٹنگ میں دلچسپی رکھنے والے قابل ذہین طلبا کو اس طرح کے اسٹریم والے پرتبھا ودیالیوں میں موقع دیا جائے۔ اگر کوئی بچہ سائنس میں بہت قابل ذہین ہے اور اس فلڈ میں کچھ الگ کرنا چاہتا ہے تو اس کے لئے سائنس اسٹریم والے پرتبھا ودیالیہ ہوں۔

وزیر تعلیم نے اساتذہ سے کہا کہ ہمارے حلقے کی ترتبھا ئیں ہیں جواب آپ کے حوالے ہیں۔ ان میں سے اچھے ڈاکٹر، انجینئر، صحافی، سائنس داں وغیرہ نکالنا آپ سب کی ذمہ داری ہے۔

نائب وزیراعلیٰ نے کہا کہ دہلی کی تعلیمی انقلاب کی چرچا پوری دنیا میں ہے۔ وہ ایجوکیشن کی ایک کانفرنس میں حصہ لینے روس گئے تھے جہاں 70 ملکوں کے نمائندوں کے بیچ جب بتایا کہ دہلی میں ایجوکیشن حلقے میں کیا- کیا ہو رہا ہے تو خوب تالیاں بجی۔ خوب سراہنا ملی۔ لیکن وہ تالیاں، وہ سراہنا ان کیلئے نہیں بلکہ بچوں، ٹیچرس، اور ایجوکیشن محکمہ کے حکام، ملازمینوں کے لئے تھیں۔

وزیر تعلیم نے کہا کہ وہ چاہتے ہیں والدین میں یہ بھروسہ آجائے کہ سرکار نے اچھے اسکول کھول رکھے ہیں، ہمیں بہت نامی- گرامی پرائیویٹ اسکولوں کی ضرورت نہیں ہے۔ ■

چلچلاتی ٹھنڈ ہو، یا بارش، خون پسینا بہا کے، ملک کیلئے اناج پیدا کرتا ہے۔ اسی لئے انہوں نے جوان اور کسان کو سب سے زیادہ عزت دی۔ ان سے تحریک لے کر شہیدوں کے خاندان کو سمّان دینے کے لئے دہلی سرکار نے ایک ایک کروڑ روپے کی سمّان رقم دینے کا فیصلہ کیا ہے۔ اب دہلی کے رہنے والے سینک ہوں یا دہلی پولیس کے جانباز سپاہی یا آگ بجھاتے ہوئے جان دینے والے فائر سروس کے لوگ، ان سب کے رشتہ داروں کو معزز رقم اور ایک رشتہ دار کو نوکری دے گی۔

جناب کیجری وال نے کہا کہ کسانوں کی خودکشی کی خبر سے انہیں بہت دُکھ ہوتا ہے۔ اس لئے دہلی میں کسانوں کی مدد کے لئے ایک نیا پلان بنایا گیا ہے۔ ہر کسان کے کھیت میں، تین-چار میٹر کی اونچائی پر سولر پینل لگایا جائے گا، اس سے کسان کو ایک لاکھ روپے فی ایکڑ کی سال میں اضافی آمدنی ہوگی۔ آج کسان کو 30 سے 40 ہزار فی ایکڑ کی آمدنی ہوتی ہے۔ ایک طرح سے اس کی آمدنی 3 سے 4 گنا ہو جائے گی۔

انہوں نے کہا کہ کافی وقت گزر چکا ہے، اسلئے ان کی سرکار ترقیاتی کاموں کو تیزی سے پورا کرنا چاہتی ہے۔ اس موقع پر تمام اسکولوں کے بچوں نے رنگارنگ پروگرام پیش کیا۔ بھارت کے شاندار جھانکی کے ساتھ ساتھ شہیدوں کے لئے خراج عقیدت سے بھرے ان پروگراموں نے ناظرین کا دل فریفتہ کر دیا۔ ■

ملے گی۔ جب ہندو کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی، جب عیسائی کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی، جب مسلمانوں کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی، جب سکھ کے، جین کے، بودھ کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی۔ جب بنیاں کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی، جب موچی کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی، دھوبی کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی، جب براہمن کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی، چاہے اِس جاتی کا ہو چاہے اُس جاتی کا ہو، ہر جات کے ہر دھرم کے بچے کو اچھی تعلیم ملے گی تب بھارت ماتا کی جے ہوگی۔ سارے اسکول اچھے ہوں گے تب بھارت ماتا کی جے ہوگی۔ جب سارے اسپتال اچھے ہوں گے، تب بھارت ماتا کی جے ہوگی، جب ملک کے اندر خوب فیکٹریاں بنے گی، ملک کے اندر خوب بزنس بڑھے گا، ہر نوجوان کو روزگار ملے گا تب بھارت ماتا کی جے ہوگی۔ جب ایسا کوئی دیش نہیں ہوگا جو بھارت کو کھڑا ہو کے آنکھیں دِکھا سکے، تب بھارت ماتا کی جے ہوگی۔ جب اس دنیا کے سارے ملکوں کے ساتھ ہمارے اچھے رشتے ہوں گے، اچھے دوست ہوں گے تب بھارت ماتا کی جے ہوگی۔ جب اس ملک کے اندر خواتین کو عزت ملے گی، خواتین کو سیکورٹی ملے گی تب بھارت ماتا کی جے ہوگی۔ جب ملک کے کسان کو احترام ملے گا، اس کو اپنی سب فصلوں کی قیمت ملے گی، تب بھارت ماتا کی جے ہوگی۔

آج سے ڈیڑھ -دو ہزار سال پہلے دنیا کی سب سے مشہور یو نیور سٹی، واشنگٹن یا نیو یارک میں نہیں نا لندہ میں تھی۔ہمارے ملک کا یہ یو نیور سٹی نمبر 1 یو نیورسٹی تھا پو ری دنیا کے اندر ۔ لیکن آج دنیا کے ٹاپ 10 یو نیور سٹیوں میں ایک بھی بھارت کی یو نیور سٹی کا نام نہیں ہے۔

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ آج سے ڈیڑھ -دو ہزار سال پہلے دنیا کی سب سے مشہور یونیورسٹی، واشنگٹن یا نیویارک میں نہیں نالندہ میں تھی۔ ہمارے ملک کا یہ یونیورسٹی نمبر 1 یونیورسٹی تھا پوری دنیا کے اندر۔ لیکن آج دنیا کے ٹاپ 10 یونیورسٹیوں میں ایک بھی بھارت کی یونیورسٹی کا نام نہیں ہے۔ ان کا خواب ہے کہ آنے والے وقت میں ٹاپ 10 یونیورسٹی کے اندر کم سے کم تین یونیورسٹی بھارت کی ہونی چاہیئے۔ انہوں نے کہا کہ دو تین ہزار سال پہلے ہڑپا میں، موہن جوداڑو میں، دنیا کا سب سے بہترین سیور سسٹم تھا۔ لیکن اب ملک کی راجدھانی کے اندر ایک مؤثر سیور سسٹم نہیں ہے۔ بہر حال، دہلی کا سیور سسٹم بدلنے کی تیاری ہو چکی ہے۔ اگلے پانچ سال کے اندر دہلی کے اندر پورے ملک کا سب سے بہترین سیور سسٹم ہوگا۔ جناب کیجری وال نے اس موقع پر سابق وزیر اعظم مرحوم لال بہادر شاستری کو یاد کرتے ہوئے کہا کہ انہوں نے نعرہ دیا تھا۔ " جے جوان جے کسان "لال بہادر شاستری اپنی سادگی کیلئے 'اپنی ایمانداری کیلئے جانے جاتے تھے۔ انہوں نے کہا کہ ملک کا سپاہی سرحد پر اپنی جان کی بازی لگا کر ملک کی حفاظت کرتا ہے۔ ویسے ہی ملک کا کسان دو پہر کی کڑی دھوپ ہو،

دہلی میں آج سب سے سستی بجلی مل رہی ہے، سب سے سستا پانی مل رہا ہے، پانی مفت ہوگیا ہے۔ ایسا پورے ملک میں ہوسکتا تھا۔ وزیر اعلیٰ کیجری وال نے کہا کہ اگر ملک کے بچوں کو اچھی تعلیم دے دی جائے، اچھے اسکولوں میں پڑھا دیا، اچھے کالج میں تعلیم دے دی، تو پورے صرف ایک نسل کے اندر ملک سے غریبی اور بے روزگاری بھی دور ہوسکتی ہے۔ شرط صرف ایک ہے کہ بدعنوانی ختم ہو۔ وہ 24 گھنٹے، رات دن صرف ایک ہی بات سوچتے ہیں کہ ملک کی ترقی کیسے ہوگی؟ ملک آگے کیسے بڑھے گا؟ ہمارے بچے کیسے پڑھیں گے؟ اسپتالوں میں اچھی سہولت کیسے حاصل ہو گی؟ رات -دن ایک ہی خواب دیکھتے ہیں کہ ہماری پیاری بھارت ماتا، ہمارا پیارا بھارت دیش، دنیا کا نمبر 1 دیش کیسے بنے گا؟ اس کا ہر بچہ، اس ملک کا ہر بوڑھا، اس ملک کی ہر ایک عورت، اس ملک کا ہر ماں چاہتی ہیں کہ ہمارا ملک دنیا کا نمبر 1 ملک بنے۔ ہمارا خواب ہے کہ سائنس اور ٹیکنالوجی میں، وگیان کے حلقہ میں ہمارا ملک امریکا کو پیچھے چھوڑے۔

جناب کیجری وال نے بھارت کی قدیم تہذیب کی یاد دلاتے ہوئے کہا کہ بھارت کے عظیم سائنسداں آریہ بھٹ نے دنیا کو "0 "(زیرو) دیا۔ سب سے پہلے کیلکولس الجبیرا، ڈیسمل کا استعمال بھارت کے اندر شروع ہوا تھا۔ 2600 سال پہلے سوشرت نام کے ایک عظیم سائنسداں نے دنیا میں پہلی پلاسٹک سرجری کی تھی۔ دنیا میں سب سے پہلے موتیا بند کا آپریشن کیا تھا۔ پھر آج ایسا کیا ہوگیا کہ ہمارے ملک کے اندر ریسرچ بند ہوگئے؟ ہمارے ملک کے اندر اس طرح کے سائنسدانوں کا مظاہرہ بند ہوگئے؟ آج دنیا میں بھارت کو ایسے ملک کے طور پر جانا جاتا ہے جہاں ہندوؤں اور مسلمانوں کے بیچ دنگے ہوتے ہیں۔ جہاں خواتین کے ساتھ غلط کام ہوتے ہیں۔ لیکن ان کی سرکاری کوششوں سے تصویر بدل رہی ہے۔ لندن میں، نیویارک میں، واشنگٹن میں، فرانس میں، کناڈا میں دہلی کے محلّہ کلینک کی بھی چرچا ہو رہی ہے۔ جیسے دنیا بھر سے لوگ تاج محل دیکھنے آتے ہیں، ویسے ہی محلّہ کلینک دیکھنے کیلئے آرہے ہیں۔ دہلی کے اسکولوں میں شروع کئے گئے "ہیپی نیس کیری کولم" کی چرچا ہورہی ہے۔

اگر ملک کے بچوں کو اچھی تعلیم دے دی جائے، اچھے اسکولوں میں پڑھا دیا، اچھے کالج میں تعلیم دے دی، تو پورے صرف ایک نسل کے اندر ملک سے غریبی اور بے روزگاری بھی دور ہو سکتی ہے۔ شرط صرف ایک ہے کہ بد عنوانی ختم ہو۔ وہ 24 گھنٹے، رات دن صرف ایک ہی بات سوچتے ہیں کہ ملک کی ترقی کیسے ہو گی؟

جناب کیجری وال نے کہا کہ اکثر ہم لوگ "بھارت ماتا کی جے" بولتے ہیں۔ لیکن صرف نعرہ لگانے سے بھارت ماتا کی جے نہیں ہونے والی۔ بھارت ماتا کی جے تب ہوگی، جب ہمارے ہر بچے کو اچھی تعلیم

بھارت کی آزادی کے تحریک میں دہلی کی مرکزی کردار تھا اور ملک کی راجدھانی کا رتبہ رکھنے والا یہ شہر اس کی سالگرہ کو دلی جذبہ سے مناتا ہے۔ اس بار 72 ویں یومِ آزادی کے موقع پر بھی یہی نظارہ تھا۔ چھترسال اسٹیڈیم میں ہوئے ایک شاندار پروگرام میں دہلی کے وزیراعلیٰ اروند کیجری وال نے ترنگا فہرا کر سبھی بھارتیوں کو یومِ آزادی کی مبارکباد دی۔

جناب کیجری وال نے کہا کہ یہ موقع ان شہیدوں کو یاد کرنے کا ہے جنہوں نے آزادی کیلئے خون بہایا، تشدد برداشت کیں اور شہید ہوئے۔ ساتھ ہی خود سے پوچھنے کا بھی موقع ہے کہ کیا ان شہیدوں نے جو خواب دیکھا تھا، وہ پورا ہوگیا؟ انہوں نے کہا کہ ستر سال، اکہتر سال کسی بھی ملک کی زندگی میں ایک لمبا وقت ہوتا ہے۔ دوسرے عالمی جنگ میں جاپان پوری طرح سے برباد ہوگیا تھا۔ ناگاساکی اور ہیروشیما پر بم پھینکے گئے تھے۔ لیکن اس کے بعد 20-25 سال کے اندر واپس کھڑا ہوگیا۔ خوب ترقی کی اور آج ہم سے کہیں آگے ہے۔ ہمارے آزاد ہونے کے بعد کئی اور ایسے ملک ہیں، جو بعد میں آزاد ہوئے۔ لیکن آج ترقی کے علاقے میں ہم سے کہیں آگے نکل گئے۔ ایسا کیوں ہوا؟

وزیراعلیٰ نے کہا کہ جب وہ سیاست میں نہیں آئے تھے تو اکثر اس سوال سے جھونجھتے تھے کہ بھارت پچھڑا کیوں رہ گیا؟ ہمارے ملک کے لوگ اَن پڑھ کیوں رہ گئے؟ ہمارے ملک کے لوگ غریب کیوں رہ گئے؟ ہمارے ملک میں کسان آج بھی خودکشی کیوں کر رہے ہیں؟ یہ آخر ہمارے میں کیا کمی ہے؟ ہمارے ملک میں اتنے انٹیلی جینٹ لوگ ہیں، اتنے اچھے لوگ ہیں، ایماندار لوگ ہیں، ہمارے ملک میں ندیاں ہیں، پہاڑ ہیں، جنگل ہیں، پھر ہمارا ملک پچھڑا کیوں رہ گیا؟ لگتا تھا کہ ضرور کچھ نہ کچھ وجہ ہوں گی جو سرکاریں کچھ کر نہیں پا رہی ہیں۔ لیکن سرکار میں آنے پر تین سال کا تجربہ بتاتا ہے کہ دہلی میں بے مثال ترقی ہوئی۔ دہلی کی ترقی کی کہانی پوری دنیا میں چرچا کا موضوع بن چکی ہے۔

جناب کیجری وال نے کہا کہ پچھلے تین سال میں دہلی کے سرکاری اسکولوں کا کایا پلٹ ہوئی۔ دہلی کے سرکاری اسکولوں کے نتیجے پرائیویٹ اسکولوں سے کہیں زیادہ بہتر آرہے ہیں۔ دہلی کے سرکاری اسکول ہر علاقے میں اپنا نام روشن کر رہے ہیں۔ لوگ اپنے بچوں کو پرائیویٹ اسکولوں سے نکال۔ نکال کر سرکاری اسکولوں میں بھرتی کرا رہے ہیں۔ دہلی میں محلّہ کلینک بن رہے ہیں جن کی چرچا پوری دنیا میں ہو رہی ہے۔ دہلی کے سرکاری اسپتالوں کا کایا پلٹ ہو رہی ہے۔ دہلی کے سرکاری اسپتالوں میں ساری دوائیاں، سارے ٹیسٹ، سارا علاج، سارے آپریشن، ساری سرجری سب مفت کر دیئے گئے ہیں۔ دہلی کے اندر آج بجلی پورے ملک میں سب سے سستی مل رہی ہے۔ دہلی کے اندر آج لوگوں کو 24 گھنٹے بجلی مل رہی ہے۔ لوگ انورٹر کا نام بھول گئے، جنریٹر کا نام بھول گئے، بیٹری والوں کی دکانیں بند ہوگئی ہیں۔ آج دہلی کے اندر گھر گھر پانی پہونچایا جا رہا ہے۔

72 واں یومِ آزادی

بھارت ماتا کی سچی کامرانی کیلئے ملک میں خوشحالی لانی ہوگی- کیجریوال

वृक्षारोपण

DEPARTMENT OF FORESTS & WILDLIFE
GOVT. OF NCT OF DELHI
MASS PLANTATION DRIVE AT
GARHI MANDU
INAUGURATED BY
ARVIND KEJRIWAL
Garhi Mandu
S PLANTATION DRIVE, 201
PLANTATION DRIVE, 201
Garhi Mandu
September 8th, 2018 at 09:00 AM

दिल्ली सरकार
आप की सरकार

दिल्ली सरकार की ओर से सभी देशवासियों को

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

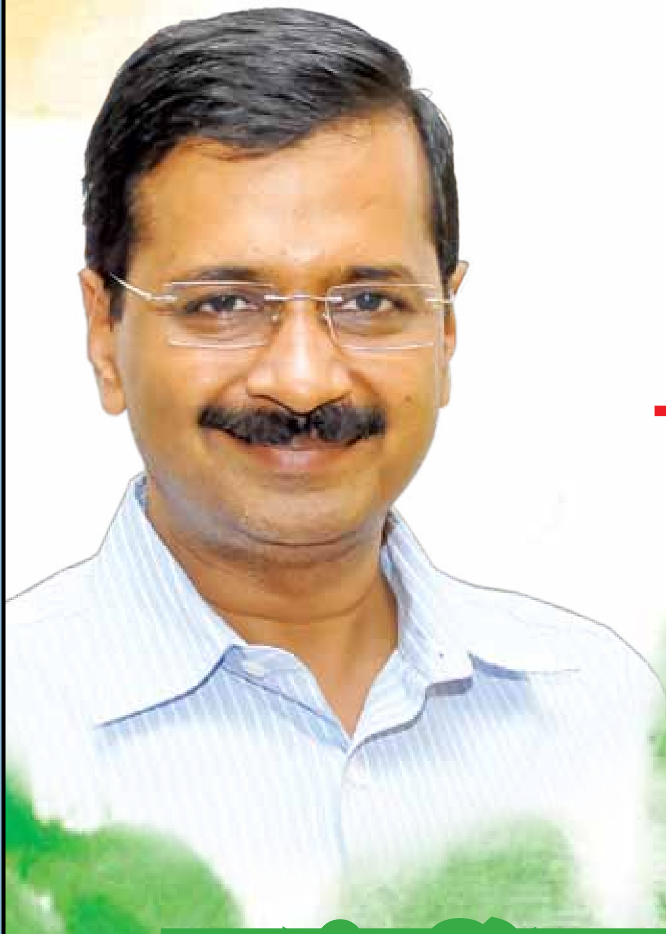

– अरविंद केजरीवाल
मुख्यमंत्री, दिल्ली

सूचना एवं प्रचार निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

डॉ. जयदेव षड़ंगी, निदेशक, सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110054 द्वारा प्रकाशित एवं आकांक्षा इम्प्रेशन्स, 18/36 स्ट्रीट नं. 5, रेलवे लाइन साइड, आनंद पर्वत इंडस्ट्रियल एरिया, न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली–05 द्वारा मुद्रित